अध्याय – 1

प्रस्तावना

भारत में ईस्ट इण्डिया कंपनी की स्थापना 1600 ई० में हुई थी और धीरे धीरे अंग्रेजो ने भारत को अपना गुलाम बना लिया था। भारतीयों ने स्वतन्त्रता संग्राम की पहली संगठित व जोरदार अभिव्यक्ति सन 1857 के पहले मुक्ति संग्राम के रूप में की थी।[1] स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास देश की जनता की महान समरगाथा है जिसमें समाज के प्रत्येक तबके ने अपना योगदान दिया और भारत को आजाद कराने में सहयोग किया। लेकिन भारत का राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष किसी व्यक्ति विशेष की देन न होकर देश की आर्थिक, सामाजिक, और राजनीतिक परिस्थितियो से प्रभावित होकर प्रस्फुटित हुआ था।[2] देश के अंदर विकसित हो रही ब्रिटिश साम्राज्यवाद विरोधी धारा में समय–समय पर विभिन्न लोगों, वर्गों, एवं दलों ने भाग लिया। लोगो ने घर बार त्याग कर आजादी की लड़ाई में संघर्ष का मार्ग अपनाया। त्याग और शोर्य की लड़ाई में देश की नोजवान पीढ़ी

---

[1] अवतार सिंह जसवाल, **आज़ादी की लड़ाई :गांधी और भगत सिंह**, अनामिका पब्लिशर एंड डिस्टिबूटर्स, नई दिल्ली, 2012, पृ.9

[2] मम्यनाथा गुप्त, **भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास**, आत्मा राम एंड संस, दिल्ली,1960, पृ० 5

सम्पूर्ण राष्ट्र से अग्रणी भूमिका में रही और देश के क्रांतिकारी आंदोलन की प्रतीक बनकर उभरी।

भारतीय जनता में जो स्वाधीन भारत की इछा जागृत हो रही थी, उसमें देश के नोजवान सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे और अपने प्राण तक देश की आजादी के लिए लगा रहे थे।

भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन में मुख्य रूप से दो धाराए रही थी। एक कांग्रेस व दूसरी क्रांतिकारियों की और राष्ट्रीय आंदोलन में शुरू से लेकर अंत तक क्रांतिकारी आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

सन 1857 के आंदोलन के बाद भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण मोड आया क्योंकि उसके बाद क्रांतिकारी आंदोलन निरंतर विकाश की तरफ जा रहा था। स्वतन्त्रता आंदोलन में नोजवानों द्वारा सबसे बड़ा धमाका 1897 ई० में पुणे में **चापेकर बंधुओं** ने किया था। भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में अनेक महान क्रांतिकारी पुरूष हुए है, जिनके कार्य व क्रांतिकारी गतिविधियां आज भी सबको याद है। इन क्रांतिकारियों में से भगत सिंह के स्वतन्त्रता आंदोलन में किए गये कार्यो व उनके योगदान के विश्लेषण का प्रयास किया गया है।

स्वतन्त्रता आंदोलन में शहीद भगत सिंह व उनका क्रांतिकारी दल एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भगत सिंह ने आजादी के आंदोलन में

प्रवेश सन 1921 में महात्मा गांधी द्वारा चलाये गए असहयोग आंदोलन में किया था। भगत सिंह से पहले क्रांतिकारी आंदोलन देश तक सीमित था व अपनी दिशा व लक्ष्य भी तय नहीं कर पाया था। भगत सिंह बोधिक व विचारात्मक गतिविधियो के कारण पूर्वर्ती क्रांतिकारियों व आंदोलनकरियों से भिन्न थे। उन्होने अपने विचारात्मक संघर्ष से नेतृत्व प्रदान किया और क्रांतिकारी आंदोलन को संकीर्ण दायरे से निकालकर विभिन गतिविधियो के माध्यम से आम जनता का आंदोलन बनाने में अहम भूमिका निभाई। इसी के साथ साथ उन्होने इस आंदोलन को राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन बनाने की दिशा में न केवल सार्थक प्रयास किया बल्कि उसे व्यापकता भी प्रदान की थी।

उन्होने अपने अत्यंत अल्पकारी जीवन में साहस व कुर्बानी के आदर्श के साथ साथ क्रांति की वैज्ञानिक विचारधारा का प्रतीक बनकर अग्रणी नेता की भूमिका अदा की थी और स्वतन्त्रता आंदोलन में आजादी के बाद समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने के लिए काम किया था।[3] भगत सिंह ने जब क्रांतिकारी गतिविधियो की शुरुवात की, उस समय स्थिति बदल चुकी थी। चोरा–चोरी की घटना में काफी पुलिस वाले मारे गये और कई थानो को आग लगा दी गई थी।

---

[3] के.सी.यादव एंड बबर सिंह ,**वाये आई एम एथिष्ट**,हॉप इंडिया,गुडगाव(हरियाणा),2005,पृ.13

जिस कारण महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन वापिस ले लिया था। जिसके कारण क्रांतिकारियों का जोश ठंडा पड़ गया और उनका प्रयास विफल साबित हुआ।[4] भगत सिंह ने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन के हालातो को समझ लिया था और गांधी मार्ग का रास्ता त्याग कर क्रांतिकारी मार्ग को अपना लिया था। उनके अनुसार क्रांति का मतलब मात्र उथल पुथल या खूनी संघर्ष नहीं था।

उन्होने समाज में मोजुदा हालात को पूरी तरह ध्वंस करके समाज के पुनर्गठन की बात की थी।[5] भगत सिंह सोचते थे की यदि क्रांतिकारी आंदोलन का जनता के साथ सामजस्य स्थापित न हुआ तो वे निश्चित रूप से अपने अंतिम लक्ष्य को हासिल करने में विफल होंगे।[6]

सन 1926 में जनता से सीधे जुडने के लिए **नोजवान भारत सभा** की स्थापना की थी जो जनता में सीधे रूप से कार्य करती व उनको जागरूक करने का काम करती थी। भगत सिंह को साहित्य में गहरी रुचि थी, उन्होने बहुत कम समय में बहुत अधिक साहित्य का अध्ययन कर लिया था।

---

[4] भूपेन्द्र दुआ, **ए मरटीयर्स नोटबुक : भगत सिंह**, आलेख पब्लिशर्स, जयपुर ,2009,पृ.2

[5] दिपचंद्र निर्मोही, **भगत सिंह से दोस्ती ; सूरज का सफर**, साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 19

[6] रवि रंजन और एम के सिंह, **भगत सिंह**, के के पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 2

जिसमें उन्होने में जिनी व गोरीबाल्डी की जीवनीयां, फ्रांस की क्रांति का इतिहास, रूसो के रूढ़िवाद विरोधी क्रांतिकारी विचार और विश्पिगनर, क्रोपोटोकिन रूसी क्रांतिकारियों की जीवनिया पढ़ी जिनका उन पर गहरा प्रभाव पड़ा, वे मार्क्स के विचारों से सबसे ज्यादा प्रभावित हुए और खुद भी समाजवादी विचारक बन गए थे।[7]

क्रांतिकारियों ने हिंदुस्तान रिपब्लिक एसोसियशन बनाया और पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग उठाई। 8–9 सितंबर 1928 को हिंदुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन मिटिंग हुई थी जिसमें संगठन के नाम में समाजवादी शब्द को जोड़ा गया जिससे उनकी विचारधारा का पता चलता है।[8] हिंदुस्तान सोसलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन का सविधान और कार्यक्रम अपने पूर्व के क्रांतिकारी आंदोलन से वैज्ञानिक, ठोस, व्यवहरिक और क्रांति की नई नियोजित रणनीति बनाने में सक्षम था। भगत सिंह ने अपनी बात आम जनता तक पहुचाने के लिए जेल में भी अपना आंदोलन जारी रखा था। उन्होंने और उनके साथियों ने ब्रिटिश सरकार की कोर्ट को भी अपनी आवाज को जनता तक पहुचाने के लिए प्रयोग किया था। इस प्रकार

---

[7] यसपाल, **सिंघाव्लोक्न** ,लोक भर्ती प्रकाशन, इलाहबाद,1994,पृ.93

[8] श्याम सुंदर, **शहिद भगत सिंह ;लक्ष्य और विचारधारा**, एकता प्रकाशन ,हिसार ,2012,पृ.25

उन्होने अपने अल्प जीवन में एक महान क्रांतिकारी के रूप में व समाजवादी विचारक के रूप में कार्य किया था।[9]

उपलब्ध साहित्य की समीक्षा

भगत सिंह के जीवन इतिहास राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन में योगदान, विचारधारा व वर्तमान में विचारो की प्रासंगिकता के बारे में काफी मात्रा में साहित्य उपलब्ध है।

भगत सिंह द्वारा जेल में रचित पुस्तक **भगत सिंह की जेल डायरी**[10] में भगत सिंह ने प्राचीन इतिहासकारों, विद्वानो प्रसिद्ध विचारकों, राजनीतिज्ञो के मुख्य विचारो को एकत्रित करके लिखा है। उन्होने मुख्यतः लेनिन और मार्क्स के विचारो को अपनी डायरी में स्वतन्त्रता व समाजवाद के मुख्य बिन्दु के तौर पर रखा गया है।

भगत सिंह का प्रसिद्ध लेख **में नास्तिक क्यो हूँ**[11] माना जाता है। इस लेख को को **के. सी. यादव** ने अपनी पुस्तक **''वाय आई एम एथिष्ट''** में संकलित किया है। यह लेख उन्होने ने जैल के दिनों में लिखा था और इसमें धार्मिक कटरता व अंधविश्वास पर अपने विचार दिये थे।

---

[9] के॰ एल॰ जोहर, मारटीयर भगत सिंह एन इंटीमेट व्यू, स्नेह प्रकाशन ,यमुनानगर,2007,पृ॰ 128

[10] भगत सिंह **,भगत सिंह की जैल डायरी** ,निदेशक ,सूचना एव जन संपर्क विभाग ,हरियाणा ,चंडीगढ़, 2008.

[11] के. सी. यादव**, मै नास्तिक क्यो हु,** हॉप पब्लिकेशन गुडगाव,2005

जगमोहन सिंह व चमन लाल द्वारा संपादित **भगत सिंह ओर उनके साथियो के दस्तावेज**[12] में भगत सिंह के खुद के द्वारा लिखे गए साहित्य को सकंलित किया गया है व उनके साथियो द्वारा लिखे गऐ लेखों को भी शामिल किया गया है।

चमन लाल के द्वारा संपादित **भगत सिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज**[13] पुस्तक में उनके द्वारा लिखे गए लेख और पत्रों को संकलित किया गया है। इसमें उनके अपने घर वालों को लिखे गऐ प्रत्येक पत्र को छापा गया है। इसमें भगत सिंह के दोर का स्वतन्त्रता आंदोलन भी शामिल किया गया है। भगत सिंह के सामाजिक व राजनीतिक घटनाओ पर लिखे गऐ लेखो और उनके जैल से अंग्रेज अधिकारियों को लिखे गऐ पत्रो को भी छापा है।

एकता प्रकाशन द्वारा सम्पादित **शहीद भगत सिंह के अति महत्वपूर्ण दस्तावेज**[14] में उनके द्वारा लिखे गए पत्रों व लेखों का वर्णन किया गया है व विस्तार से विश्लेषण भी किया है।

शिव वर्मा द्वारा संपादित पुस्तक **भगत सिंह की चुनी हुई कृतियां** नाम से है। इसमें शिव वर्मा ने अपने खुद के द्वारा लिखे गऐ लेखो का

---

[12] जगमोहन सिंह व चमन लाल, **भगत सिंह ओर उनके साथियो के दस्तावेज़,**राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013

[13] चमन लाल, **भगत सिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज़,** आधार प्रकाशन,पंचकुला,2004

[14] श्याम सुंदर, **शाहिद भगत सिंह के अति महत्वपूर्ण दस्तावेज़,** एकता प्रकाशन,हिसार(हरियाणा), 2012

वर्णन किया गया है। उन्होने इस पुस्तक में अपने अनुभव को भी शामिल किया है।

भगत सिंह के बारे में दूसरे लेखकों द्वारा लिखा गया साहित्य भी काफी मात्रा में उपलब्ध है और नया साहित्य भी लिखा जा रहा है।

इसमें रवि रंजन व एम. के. सिंह द्वारा लिखी गई पुस्तक **भगत सिंह**[15] में उनके बचपन से लेकर क्रांतिकारी गतिविधियो तक का विश्लेषण किया गया है। भगत सिंह की क्रांतिकारी गतिविधियों का स्वतन्त्रता आंदोलन पर प्रभाव व उनकी विचारधारा का स्वतन्त्रता आंदोलन में योगदान का विश्लेषण किया गया है। सबसे महत्वपूर्ण यह है की इन्होंने ने भगत सिंह के और उनके लक्ष्य को स्पष्ट रूप से बताया गया है।

कुलदीप नयर के द्वारा लिखी गई पुस्तक **शहीद भगत सिंह व क्रांति के प्रयोग**[16] में भगत सिंह के जीवन के प्रत्येक कार्य को व उनकी विचारधारा को जोड़ते हुए उनका स्वतन्त्रता आंदोलन में योगदान का विश्लेषण कर रखा है। इन्होंने ने भगत सिंह की विचारधारा को स्वतन्त्रता के महत्वपूर्ण अंग के तोर पर दर्शाया है।

---

[15] रवि रंजन व एम. के., **भगत सिंह**, के.के. पब्लिकेशन, नई दिल्ली,2009

[16] कुलदीप नयर ,**शहीद भगत सिंह ; क्रांति के प्रयोग**,सवाद प्रकाशन,मुंबई,2004

मलविंदर जीत सिंह वरेच की पुस्तक **भगत सिंह द एटेरनल रिबल**[17] में भगत सिंह के जैल के जीवन व उन पर चलाए गए अदालत के मुकदमो के बारे में विस्तार से बताया गया है और भगत सिंह के अध्यन कार्य पर भी प्रकाश डाला है।

शिव कुमार मिश्र की पुस्तक **गदर पार्टी से भगत सिंह तक**[18] में भगत सिंह व उसकी पार्टी के आंदोलन को गदर आंदोलन के भविष्य के रूप में विश्लेषित किया गया है क्योंकि भगत सिंह ने गदर पार्टी की विचारधारा को आगे बढ़ाने का काम किया है था।

विकाश नारायन रॉय के द्वारा लिखित पुस्तक **भगत सिंह से दोस्ती**[19] में उनके पारिवारिक स्थिति का वर्णन किया गया है। उनके पूरे परिवार भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अग्रणी भूमिका में रहा था इस बात को उलेखित किया है।

एम. एल. धवन दारा लिखित पुस्तक **भारत में राष्ट्रीय आंदोलन**[20] में भारत की आर्थिक व सामाजिक पृष्ट भूमि को बताया गया है और स्वतन्त्रता आंदोलन को जन्म देने वाले तथ्य का भी मूल्यांकन

---

[17]मलविंदर जीत सिंह वरेच, **भगत सिंह यद एटेरनल रिबल डिविजन**, नई दिल्ली, 2007
[18] शिव कुमार मिश्र ,**गदर पार्टी से भगत सिंह तक,**लोक प्रकाशन गृह,दिल्ली 2014
[19] विकाश नारायन रॉय,**भगत सिंह से दोस्ती**, इतिहासबोध प्रकाशन, दिल्ली ,2008
[20] एम. एल. धवन, **भारत मे राष्ट्रीय आंदोलन,** अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,2003

किया गया है। भगत सिंह पर इन परिस्थितियों के प्रभाव का मूल्यांकन करते हुए उनके योगदान को परिभाषित किया है।

आयोध्य सिंह की पुस्तक **भारत का मुक्ति संग्राम**[21] भगत सिंह से पहले से हो रहे स्वतन्त्रता आंदोलन व उसके पीछे रहे आर्थिक सामाजिक कारणों का आंकड़ों के साथ विश्लेषण किया किया है। भगत सिंह के क्रांतिकारी कार्यो का व उनकी विचारधारा का स्वतन्त्रता आंदोलन में योगदान का निष्पक्षता से विश्लेषित किया है।

वी. के. अग्निहोत्री की पुस्तक **भारतीय इतिहास**[22] में पूरे भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन के प्रत्येक पक्ष का विश्लेषण किया है। इसमें उन्होने भारत की कमजोर आर्थिक स्थिति के कारणो को भी चिनिहत किया है।

विपिन चन्द्र द्वारा लिखित **स्वतन्त्रता संग्राम**[23] आज तक की स्वतन्त्रता आंदोलन पर लिखी गई पुस्तकों में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है है। इन्होंने इस पुस्तक में स्वतन्त्रता संग्राम में भगत सिंह के योगदान को दर्शाया है व भगत सिंह और क्रांतिकारी पार्टी की विचारधारा का आंदोलन पर प्रभाव को विश्लेषित किया है।

---

[21] आयोध्य सिंह, **भारत का मुक्ति संग्राम,** ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2003

[22] वी. के.अग्निहोत्री, **भारतीय इतिहास,** एलाइड पब्लिशर्स, दिल्ली, 2011

[23] विपिन चन्द्र, **स्वतन्त्रता संग्राम,** नेशनल बूक ट्रस्ट, नई दिल्ली,1992

जोस जियोर्ज और मनोज कुमार की **रिथिंकिंग रैडिकल इन इंडियन सोसाइटी**[24] में भगत सिंह की विचारधारा भारतीय समाज में आज भी प्रासंगिक है उसके बारे में विश्लेषण किया गया है। भगत सिंह की समाजवादी विचारधारा को पूरे स्वतन्त्रता आंदोलन की अन्य घटनाओं के साथ जोड़ कर परिभाषित किया है।

मुद्रराक्ष्स द्वारा लिखित पुस्तक **भगत सिंह होने का मतलब में** [25] भगत सिंह की अन्य स्वतन्त्रता सेनानियो के साथ तुलना करके उनके योगदान को कम आंकने पर कटाक्ष किया गया है। उनके स्वतन्त्रता आंदोलन में योगदान को निरस्क्ता के साथ विश्लेषण किया जाए इस पर जोर दिया है। उन सभी लेखको और विचारको की आलोचना की है जिन्होंने भगत सिंह का स्वतन्त्रता आंदोलन के इतिहास में बहुत कम शब्दो में विशलेषण किया है।

आशा रानी व्होरा द्वारा लिखित स्वाधीनता सेनानी लेखक–पत्रकार में भगत सिंह के असेम्बली में फेके गऐ बम का विश्लेषण किया गया है। उनकी स्मजवादी विचारधारा को केंद्र में रखकर लिखा गया है।

---

[24] जोस जियोर्ज और मनोज कुमार, **रिथिंकिंग रैडिकल इन इंडियन सोसाइटी**, रावत पब्लिकेशन, नईदिल्ली,2009

[25] मुद्रराक्ष्स,**भगत सिंह होने का मतलब,** साहित्य उपक्रम,नईदिल्ली ,2008

मदन लाल कपूर की पुस्तक **स्वतन्त्रता संग्राम के विद्रोही, कांड एव आंदोलन**[26] में भगत के दल **एच एस आर ए** के द्वारा की गई क्रांतिकारी गतिविधयों को शामिल किया गया है। इस पुस्तक में भगत सिंह से जुड़ी अन्य गतिविधियों जिसमें भगत सिंह खुद सामील नहीं थे का भी जिक्र किया गया है।

चमन लाल द्वारा लिखित लेख **रेयर डाक्यूमेंट्स आफ एंड अबाउट भगत सिंह**[27] में भगत सिंह के 75वे शहीदी दिवस और जन्म की 100वी वर्षगांठ के अवसर पर हुए राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों का जिक्र किया गया है। इसमें उनकी वर्तमान में प्रसगिकता और विभिन्न दस्तावेजों व पुस्तकों के बारे में लिखा गया है।

नजीरुल हसन अंसारी द्वारा लिखित लेख **भगत सिंह फॉर टूड़े**[28] में शहीद भगत सिंह के **लेख साम्प्रदायिक दंगे और उनका इलाज** का वर्णन किया है इस उपलब्ध साहित्य के आधार पर शहीद भगत सिंह को एक क्रांतिकारी के रूप में व्याख्या की गयी है और समाजवादी विचारक के रूप में वर्णन मिलता है।

---

[26] मदन लाल कपूर, **स्वतन्त्रता संग्राम के विद्रोही ,कांड एव आंदोलन,** देवज्योति बुक्स प्राइवेट लिमिटेड,करनाल,2010

[27] चमन लाल, **रेयर डाक्यूमेंट्स आफ एंड अबाउट भगत सिंह,** मैनस्ट्रीम,वॉल्यूम -45, 2007

[28] नजीरुल हसन अंसारी,**भगत सिंह फॉर टूड़े,** दिल्ली, 2005

प्रासंगिकता एवं महत्व

भगत सिंह ने स्वतन्त्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। भगत सिंह ने क्रांतिकारी व एक समाजवादी विचारक के रूप में योगदान दिया था।

उन्होने आजादी व समाज सुधार के लिए बहुत कष्ट सहन किए और देश की आजादी के लिए शहीद हो गए थे। उनके विचारों के अनुसार आज भी समाज में मूलभूत परिवर्तन करने की जरूरत है। क्योंकि आज भी शोषण विहीन समाज कायम नहीं हुआ है सिर्फ गोरे अंग्रेजो की जगह काले अंग्रेज आ गए है और आज भी मनुष्य का मनुष्य द्वारा शोषण हो रहा है ।

भगत सिंह और उनके क्रांतिकारी साथियों के जीवन व विचारधारा को भारतीय सिनेमा ने आज के समय में पर्दे पर उजागर किया है। 21वीं सदी के प्रथम दशक में भारतीय सिनेमा ने क्रांतिकारियों की विचारधारा व कार्यो को आज की युवा पीढ़ी तक पहुचाने की कोशिश की है। ये फिल्में काफी लोकप्रिय हुई और युवाओ में नया जोश व उमंग पैदा करने में सहायक सिद्ध हुई है। 21वीं सदी को युवाओं की सदी माना गया क्योंकि भारत में 60 प्रतिशत युवा हैं जो की दुनिया में सबसे ज्यादा हैं।

4. राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन में भगत सिंह के आंदोलन, विचारधारा, क्रांतिकारी दर्शन एवं जीवन शैली की वर्तमान में प्रासंगिकता को समझना।

अध्ययन का क्षेत्र

इस लघु शोध के अध्यन का क्षेत्र भगत सिंह का बचपन, शिक्षा और उनको प्रभावित करने वाले वाले स्त्रोत व उनके समय में भारत की आर्थिक व सामाजिक स्थिति और उनके स्वतन्त्रता आंदोलन में योगदान को जानने क लिए अध्ययन करना है। भगत सिंह के पारिवारिक परिवेश व उनके प्रेरणा स्त्रोत को जानना तथा उन्होने स्वतन्त्रता आंदोलन में कोन सा मार्ग अपनाया और उस मार्ग को अपनाने के पीछे क्या कारण थे। क्या वह मार्ग सही था। भगत सिंह किस विचारधारा से प्रेरित होकर आंदोलन को चला रहे थे।

शहीद भगत सिंह के कार्यो से यह जानने का प्रयास किया गया है की वे उग्रपंथी थे या नहीं भगत सिंह से पहले स्वतन्त्रता आंदोलन की क्या स्थिति थी और भगत सिंह ने स्वतन्त्रता संग्राम की दिशा में क्या बदलाव किए और स्वतन्त्रता प्राप्ति के क्या उद्देश्य सामने रखे गये। भगत सिंह की विचारधारा का स्वतन्त्रता आंदोलन पर कैसा प्रभाव पड़ा तथा भगत सिंह ने क्रांति में किन किन गतिविधियो को शामील किया। भगत

सिंह के क्रांतिकारी आंदोलन का प्रभाव क्या देश तक ही सीमित था या उसका विदेशो में भी प्रचार था। भगत सिंह के क्रांतिकारी कार्यो और जेल की हड़ताल का तत्कालीन समाज व भारतीय शासन व्यवस्था पर जो प्रभाव पड़ा उसका अध्यन करना।

शोध प्रश्न

भगत सिंह ने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जिससे स्वतन्त्रता आंदोलन को नए आयाम व गति मिली थी। उनके जीवन इतिहास, स्वतन्त्रता में योगदान व प्रासंगिकता के आधार पर प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के विषय से संबन्धित निम्न प्रश्न उभर कर सामने आए है :–

1. भगत सिंह के क्रांतिकारी आंदोलन के माध्यम से स्वतन्त्रता आंदोलन में दिये गये योगदान को क्या आतंकवादी आंदोलन कहना औचित्यपूर्ण है ।
2. राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन में भगत सिंह के क्रांतिकारी आंदोलन व विचारधारा के क्या उदेश्य थे ।
3. राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन भगत सिंह द्वारा क्रांतिकारी आंदोलन चलाये गये क्रांतिकारी आंदोलन समाजवादी विचारधारा से कितना प्रभावित हुआ था।

4. राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन के संदर्भ में भगत सिंह द्वारा चलाए गए क्रांतिकारी आंदोलन को क्या भगत सिंह ने अपने विचारों के अनुरूप चलाया था।

5. भगत सिंह राष्ट्रीय आंदोलन में स्वतंत्र भारत के लिए कैसी शासन व्यवस्था स्थापित करने का स्वप्न देख रहे थे।

6. राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन के संदर्भ में भगत सिंह के क्रांतिकारी आंदोलन, समाजवादी विचारधारा, चिंतन शैली, वैज्ञानिक दृष्टिकोण व शासन के स्वप्न की वर्तमान भारतीय युवा में क्या प्रासंगिकता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत लघु शोध में ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक एव तुलनात्मक अध्ययन पद्धतियो का प्रयोग किया जाएगा। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीय दोनों प्रकार के स्त्रोतों से सामग्री एकत्रित की जाएगी। प्राथमिक स्त्रोतों में भगत सिंह के द्वारा लिखे गये लेखों को लिया जाएगा।

द्वितीय स्त्रोतों में दूसरे लेखको व विचारकों दवारा उनके उपर लिखे लेखो व पुस्तक का प्रयोग की जाएगा व भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन पर लिखा गया समान्य साहित्य का भी अध्ययन किया जाएगा।

इस शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए उनके स्वतन्त्रता आंदोलन में योगदान का अध्ययन किया जाएगा व उनके विचारो की आज के दिन प्रासंगिकता का अध्ययन किया जाएगा।

पाठ योजना

प्रथम अध्याय : प्रस्तावना

द्वितीय अध्याय : भगत सिंह की शिक्षा व प्रभावित करने वाले स्त्रोत

तृतीय अध्याय : भगत के समय में भारत की आर्थिक व समाजिक स्थिति।

चतुर्थ अध्याय : राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आंदोलन में भगत सिंह का योगदान : एक विश्लेषण

पंचम अध्याय : निष्कर्ष

अध्याय – 2

भगत सिंह की शिक्षा और प्रभावित करने वाले स्त्रोत

भगत सिंह भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रसिद्ध क्रांतिकारियों में से एक है। महान विचारक के. एन. पानीकर ने कहा है कि उनकी देश भक्ति और देश के लिए अपने प्राण त्यागने के कारण उन्हें **शहीद भगत सिंह** के नाम से सम्बोधित किया जाता हैं।[1]

भगत सिंह के पूर्वज महाराजा रणजीत सिंह के समय में 'खालसा सरदार' के नाम से प्रसिद्ध थे। पश्चिम में खूंखार पठानों और पूर्व में शक्तिशाली अंग्रेजों के विरुद्ध सिक्ख साम्राज्य फैलाने में इन लोगों ने सिक्ख शासकों को सहायता पहुंचाई थी।

भगत सिंह के पितामह स्वर्गीय सरदार अर्जुन सिंह पहले एक बड़े जमीनदार थे। वो लाहौर षडयन्त्र केस में बहुत रुचि लेते थे। राष्ट्रीयता की भावना उनमें कूट–कूट कर भरी थी। सरदार बहादुर सिंह और दिलबाग सिंह आदि इनके भाई–बंधू सरकार की सेवा करने के कारण धनवान हो गए थे और इस समय वे उच्च श्रेणी के रईसों में गिने जाते थे। परन्तु सरदार अर्जुन सिंह ने एक दूसरे ही पथ का अनुसरण किया, जिससे मनुष्य धनवान नहीं बन सकता था। सरदार भगत सिंह की दादी श्रीमती जयकौर, हिन्दू परिवार की एक आदर्श महिला थी। इन्होंने ही

---

[1]. रवि रंजन और एम.के. सिंह, **भगत सिंह,** के.के. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 1

अपने पुत्रों और पौत्रों का पालन–पोषण किया था। ये एक वीर महिला थीं। ये प्रसिद्ध देशभक्त सूफी अम्बा प्रसाद के विषय में अपने उद्गार प्रकट किया करती थीं। एक बार सूफी अम्बा प्रसाद अर्जुन सिंह के यहां आए हुए थे, पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने के लिए आ धमकी, किंतु इस वीर महिला ने बड़ी बुद्धिमानी से उन्हें बचा लिया।

सरदार अर्जुन सिंह के तीन पुत्र थे – सरदार किशन सिंह, सरदार अजीत सिंह और सरदार स्वर्ण सिंह। ये तीनों भाई अपने सच्चे देश प्रेम के लिए पंजाब में प्रसिद्ध थे। कैद निर्वासन तथा दरिद्रता के द्वारा इनकी देशभक्ति की कड़ी परीखा हो चुकी थी। यह भी कहा जाता है कि सरदार भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह ने ही लाला लाजपतराय को राजनैतिक क्षेत्र की ओर आकर्षित किया थी।

सरदार अजीत सिंह अच्छे धनवान थे किंतु राजनैतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए पंजाब को संगठित करने के उद्देश्य से उन्होंने अपने गृहस्थ जीवन के सुखों पर लात मार दी थी।[2]

इसी दौरान 1904–05 के लगभग देवयोग से बंग–भंग हुआ। पूरे बंगा ने लार्ड कर्जन के इस कार्य का जोरों से विरोध किया। बंगाल के इस आंदोलन से सुदूरस्थ पंजाब भी प्रभावित हो उठा। वहां भी लाला

---

[2]. विकास नारायण राय, **भगत सिंह से दोस्ती**, इतिहास बोध प्रकाशन, दिल्ली, 2008, पृ. 16

लाजपतराय, सरदार अजीत सिंह और इनके घनिष्ठ मित्र सूफी अम्बा प्रसाद, अपने ओजस्वी भाषणों से देश में उत्तेजना फैलाने लगे।

इस आन्दोलन में सरदार भगत सिंह के पिता किशन सिंह और उनके चाचा सरदार स्वर्ण सिंह ने भी उचित भाग लिया। सरदार भगत सिंह के पिता और चाचा राष्ट्रीय आन्दोलनों में चंदा दिया करते थे और सरदार अर्जुन सिंह इस सम्बन्ध में अपनी प्रसन्नता प्रकट किया करते थे।[3]

आधुनिक भारत के इतिहास में पहले–पहल 1907 में 1818 का तीसरा रेगुलेशन एक्ट काम में लाया गया। उस समय से इस रेगुलेशन ने ब्रिटिश सरकार का बहुत उपकार किया था। बंगाल और पंजाब दोनों ही प्रांतों में इस रेगुलेशन का भरपूर प्रयोग किया गया था। लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को भी इस कानून की चपेट में आने का सम्मान प्राप्त हुआ था। सरदार अजीत सिंह को, बिना उनके मामले की जांच किए ही कैद की सजा दे दी गई। उसी दौरान सरदार भगत सिंह के पिता और उनके चाचा राजद्रोहात्मक व्याख्यानों के लिए कैद किए गए। इस प्रकार ये लोग स्वतंत्रता आन्दोलन के मार्ग प्रदर्शक बने। सरदार स्वर्ण सिंह की मृत्यु जेल ही में हो गई थी। उसी समय 27 सितम्बर 1907 को सरदार किशन सिंह के दूसरे पुत्र सरदार भगत सिंह का जन्म हुआ।

---

[3]. **पूर्वोक्त**, पृ. 18

भगत सिंह के शुरूआती बचपन की अधिक जानकारी तो हमें उपब्ध नहीं है लेकिन यह बात प्रसिद्ध है कि पाठशाला की तंग कोठरियों की उपेक्षा, विस्तृत मैदान को वे अधिक पसंद किया करते थे।

वे अपने बड़े भाई जगत सिंह के साथ बंगा नामक स्थान के एक प्राइमरी स्कूल में भर्ती किए गए। यह स्थान उनकी जन्म भूमि लायलपुर जिले में ही था। 11 वर्ष की अवस्था में जगत सिंह की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु से बालक भगत सिंह के कोमल हृदय को बड़ा धक्का लगा।

इसके पश्चात सरदार किशन सिंह नवाकोट चले आए। यह लाहोर के समीप था। यहां उनकी कुछ जमीन जायदाद थी। इस समय सरदार भगत सिंह को किसी हाई स्कूल में भर्ती कराने की आवश्यकता थी।

सिक्खों के लिए उस समय खालसा हाई स्कूल में पढ़ना एक नियम य़ा हो गया था किन्तु उस स्कूल के अधिकारियों का झुकाव राजभक्ति की ओर अधिक होने के कारण, सरदार किशन सिंह को वह पसंद न था, इसलिए सरदार भगत सिंह लाहौर के दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल में भर्ती किए गए। यह घटना अति साधारण जान पड़ती है, किंतु इससे यह स्पष्ट है कि एक धर्मनिष्ठ सिक्ख होते हुए भी सरदार किशन सिंह ने केवल एक

ी बात का विचार कर अपने पुत्र को सिक्ख–स्कूल में न भेजकर आर्यसमाजी स्कूल में भेजना उचित समझा।[4]

इस स्कूल से सरदार भगत सिंह ने मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास की। इसके पश्चात उन्होंने नेशनल कॉलेज लाहौर में दाखिला ले लिया था। उनका दाखिला सीधे ही एफ.ए. में हुआ था और इसके बाद वे बी.ए. करने लग गये थे। इसी दौरान वे क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होने लग गए थे।

कॉलेज में पढ़ते समय वे इतिहास के गंभीर विद्यार्थी होते थे। इसके साथ–साथ राजनीति अर्थशास्त्र के अध्ययन में भी वे गहरी रुचि दिखाते थे। ये दोनों विशृय भगत सिंह व उनके साथियों को प्रो. जय चंद्र विदाएलंकर पढ़ाते थे। वे उन्हें पढ़ाने के साथ साथ दे ा के स्वतन्त्रता आंदोलन और पूरे वि व की क्रांति के बारे में भी बताते थे जिससे भगत सिंह काफी प्रभावित हुए। यहां पर सुखदेव और श्री भगवतीचरण इनके घनिष्ट मित्र थे। कॉलेज में इन तीनों ने अपने साथ कुछ और विद्यार्थियों को जोड़ कर एक गुट बना लिया था। इस गुट में अनेक विषयों के अध्ययन संबंधी चर्चा हुआ करती थी।

---

[4]. एम.एम. जुनेजा, **बायोग्राफी ऑफ भगत सिंह,** मॉडर्न पब्लिकेशन, हिसार(हरियाणा), 2008, पृ. 29

'सर्वेंटस आफ दी पिपुल सोसाइटी' द्वारकादास लाइब्रेरी में इन उत्साही युवकों के लिए मनचाही पुस्तकं मंगाकर उनके अध्ययन में उदारतापूर्वक सहायता पहुंचाया करती थी।

सरदार भगत सिंह बड़ी उत्सुकता और लगन के साथ पुस्तकों का अध्ययन करते थे। इस संबंध में नेशनल कॉलेज के प्रोफेसर छबीलदास और द्वारकादास लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन श्री राजाराम जैसे व्यक्तियों के प्रमाण मौजूद हैं। नेशनल कॉलेज की लाइब्रेरी में भी सरदार भगत सिंह की देख–रेख में पुस्तकों का अपूर्व संग्रह हो चला था। उस समय में ऐसा संग्रह और कहीं नहीं था। इटली, रूस और आयरलैंड में क्रांति सम्बन्धी नवप्रकाशित पुस्तकों का भी संग्रह किया गया था। इसमें मार्क्स, बकुनिन और रूस के नौजवान क्रांतिकारियों का साहित्य भी उपलब्ध था। भगत सिंह "अनार्किज्म एण्ड अदर एसेस" और रोड हरबट के उस भाशण से प्रभावित हुए जिसमें उन्होंने फ्रांस के क्रांतिकारी बेला द्वारा असेंबली में फेंके हुए बम के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि जब बेला से पूछा गया कि तुमने यह कार्य क्यों किया तो बेला का जवाब था कि बहरों को सुनाने के लिए धमाके की जरूरत होती है और इस कार्य के लिए मैं कोई माफी नहीं मांगूगा चाहे मुझे कोई भी सजा दी जाए।[5]

[5] रमेश विद्रोही, **भगत सिंह – लाईफ प्रशनैलीटी एण्ड आईडियास,** भावना प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975, पृ. 61

भगत सिंह इस घटना को पढ़कर काफी प्रभावित हुए। भगत सिंह ने उसी रास्ते पर आगे बढ़ते हुए 'पब्लिक सेफ्टी बिल' और ट्रेड डिसप्यूट बिल' के विरोध में भारत की असेम्बली में बम फेंका था। परन्तु नेशनल कॉलेज की अनेक बार तलाशी ली गई जिसमें पुलिस अनेक पुस्तकें उठा ले गई, अब केवल एक छोटा–सा संग्रह बचा हुआ है। किंतु जो भी बचा हुआ है, उसमें सरदार भगत सिंह की प्रतिभा और परिश्रम का पता चलता है।

भगत सिंह इतना पढ़ने के बावजूद केवल किताबों में रहने वाले विद्यार्थी नहीं थे। वे विभिन्न स्थानों का भ्रमण भी किया करते, क्रांतिकारी दलों की सभाओं में जाया करते, युक्त प्रांत तथा बंगाल की गुप्त समितियों के सदस्यों से मिला करते थे।

उनके अध्ययन का मूल्यांकन उनके लेखों से होता है। वह पढ़ने के साथ–साथ समाज मे ंचल रही समस्याओं पर भी लिखते थे। उन्होंने अपने दौर की लगभग प्रत्येक समस्या पर लेख लिखे थे।

सबसे पहला उनका लेख 1924 में जब पंजाब की भाषा समस्या के सन्दर्भ में उनकी लिपि का प्रश्न उठा तब हिन्दी और उर्दू वालों में तमाम तार्किक बहस चली, भगत सिंह ने भी इस पर अपने विचार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पंजाब के आग्रह पर लेख रूप में भेजे थे और इस लेख की

सर्वश्रेष्ठ ममकट सम्मलेन द्वारा उन्हें पचास रुपये का इनाम दिया गया था।[6]

सम्मेलन के तत्कालीन प्रधान श्री भीमसेन विद्यालंकार ने अपने पास सुरक्षित यह लेख भगतसिंह को शहादत के बाद 28 फरवरी, 1933 के **'हिन्दी संदेश'** नामक समाचार पत्र में प्रकाशित किया था।

उसके बाद भगत सिंह ने 1925 में युवकों के नाम एक पत्र लिखा जिसका शीर्षक **'युवक'** था और यह लेख **'साहित्य मतवाला'** में भगत सिंह के छदम नाम बलवन्त सिंह के नाम से छपा, इस लेख की चर्चा मतवाला के तत्कालीन सम्पादकीय कर्म से जुड़े आचार्य शिव पूजन संशय की डायरी में भी मिलती है।[7] इस लेख मे भगत सिंह ने युवाओं से आह्वान किया कि वे अपनी जवानी को व्यर्थ न बर्बाद करें बल्कि देश को आजाद करवाने के लिए हर तरह से कार्य करें। इस लेख से उनकी सोच का पता चलता है कि वे देश को आजाद करवाने में युवकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका को पहचानते थे।

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन को और अधिक धारदार व मजबूत बनाने के लिए आन्दोलन के साथ–साथ भगत सिंह द्वारा भारतीय क्रांतिकारियों को और अधिक प्रेरणा और जानकारी देने के लिए

---

[6] **भाहीद भगत सिंह के अति महत्वपूर्ण दस्तावेज,** एकता प्रकाशन, हिसार (हरियाणा), 2012, पृ. 8
[7] चमन लाल, **भाहीद भगत सिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज,** आधार प्रकाशन, पंचकुला(हरियाणा), 2004, पृ. 52

अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी आन्दोलन का भी गंभीर अध्ययन और चिन्तन किया था। उसी संदर्भ में **'किरती'** में **'अराजकतावाद क्या है'** आदि लेख और कुछ अनुवाद प्रकाशित हुए थे।

'डनब्रिज' नामक क्रांतिकारी की आत्मकथा का भी भगत सिंह ने अनुवाद किया जो बाद में पुस्तक के रूप में छपी थी।

इस तरह भगत सिंह के अध्ययन व उनके चिन्तन का दायरा बढ़ता गया। जब 1919 में जलियां वाला बाग हत्याकांड के उपरान्त अंग्रेज सरकार ने पूरे देश में साम्प्रदायिकता का ऐसा जहर बोया कि खूब हिन्दु–मुस्लिम दंगे हुए। इसके प्रभाव और परिणाम स्वरूप **'कोहार'** में 1924 में जो दंगे हुए वे अत्यन्त त्रासद और अमानवीय थे।

उस समय राजनैतिक चेतना–सम्पन्न लोगों ने इन दंगों पर लम्बी बहस की और ऐसे दंगों को समाप्त करने की जरूरत भी महसूस की कांग्रेसी नेताओं ने हिन्दू–मुस्लिम नेताओं में सुलहनामा लिख कर दंगों को रोकने की कोशिश की थी।

इस समस्या का निश्चित निदान ढूंढने हेतु क्रांतिकारी आन्दोलन ने अपने विचार व्यक्त किए। भगत सिंह ने इस राष्ट्रीय समस्या पर 'साम्प्रदायिक दंगे और उनका इलाज' नामक लेख लिखा जो 1928 के

के लिए ठोस सुझाव दिए गए हैं। यह लेख **'विद्रोही'** के नाम से जून 1928 के **'किरती'** अखबार में प्रकाशित हुआ था।[9]

भगत सिंह से युवा वर्ग काफी प्रभावित हो रहा था और अब वो स्वतंत्रता आन्दोलन व राजनीति में भागीदार व उसे समझने लगा था। इसमें एक बड़ा हिस्सा विद्यार्थियों का था जिस से भारत के सियायत करने वाले नेताओं को इस बात से डर लग रहा था कि कहीं युवा वर्ग के राजनीति में आने से उनका महत्त्व कम न हो जाए। इसलिए वे हमेशा विद्यार्थियों को राजनीति से दूर रहने की सलाह देते रहते थे और कहते थे कि विद्यार्थी का काम केवल पढ़ाई करना है, वे अपना पूरा ध्यान उस पर लगायें। लेकिन भगत सिंह उनकी इस बात को असंगत व अदूरदर्शी राय मानते थे इसलिए उन्होंने इस पर **'विद्यार्थी और राजनीति'** नाम से लेख लिखा था जो जुलाई 1928 के **'किरती'** अखबार के सम्पादकीय विचारों में प्रकाशित हुआ था।[10]

इस मसले के जवाब में लिखा गया यह लेख बहुत ही महत्त्व रखता है। इस लेख को भगत सिंह द्वारा लिखे जाने की संभावना इस बात से की जाती है कि वे स्वयं एक सक्रिय क्रांतिकारी थे तथा यह मानते थे कि जिन नौजवानों को कल देश की बागडोर संभालनी है, उन्हें अपने देश की

---

[9] श्याम सुन्दर, **शहीद भगत सिंह के अति महत्वपूर्ण दस्तावेज,** एकता प्रकाशन, हिसार (हरियाणा), 2012, पृ. 47
[10] **पूर्वोक्त,** पृ. 52

सामयिक परिस्थितियों के ज्ञान के साथ अन्याय के विरुद्ध राजनैतिक क्रांति में सक्रिय भाग लेना ही चाहिए।

इसके बाद जब भगत सिंह अंतिम दिनों में जेल की सजा काट रहे थे तब बाबा हरनाम सिंह काला सन्धिया और तेजा सिंह चूहड़काना ने उनकी मुलाकात गदर पार्टी के जुझारू कार्यकर्ता भाई रणधीर सिंह से करवाई थी, जो उसी जेल में कैद भुगत रहे थे, उन दिनों भगत सिंह ने जिस धर्म की परम्परा के विपरीत अपने केश कटवा दिए थे, इसी कारण से भाई रणधीर सिंह ने एक बार तो उनसे मिलने से इंकार कर दिया था। भगत सिंह नितान्त युगानुरूप चिन्तन करने वाले वैज्ञानिक सोच के नौजवान थे। उन्होंने ने अपने एक पत्र में भाई रणधीर सिंह को लिखा था, "अभी तो मैंने सिख धर्म का एक अंक की कटवाया है और पेट के लिए नहीं, देश के लिए जल्दी ही गर्दन भी कटवाऊंगा। लेकिन एक सिख की तंगनजरी व तंगदिली का गिला जरूरी रहेगा।

वे पुराने विचारों को नए युग की परिस्थिति और परिवेश में ज्यों का त्यों मानने के पक्ष में कतई नहीं थे और मानते थे, 'वैज्ञानिक विचार अपना कर ही भविष्य की समस्याएं हल को सकती हैं। रूढ़िवादी परम्परा के खिलाफ भगत सिंह द्वारा लिखा गया यह दस्तावेज '**मैं नास्तिक क्यों**

हूँ?' भाई रणधरी सिंह के सवालों का उत्तर देते हुए धर्म और सम्प्रदाय सम्बन्धी सभी रूढ़ियों और संकीर्णताओं को सर्वथा निरस्त कर देता है।[11]

भगत सिंह के बचपन के संस्कारों के बनने में यदि पूरे परिवार के देशभक्त होना एक पक्ष था तो दूसरा पक्ष भगत सिंह का स्वयं का अध्ययन व उसके साथ–साथ संघर्ष भी था जिसके कारण भगत सिंह क्रांतिकारी होने के साथ एक अच्छे विचारक भी बन गए थे।

भगत सिहं पर बचपन में सबसे ज्यादा प्रभाव गदर आन्दोलन का पड़ा था। क्योंकि उनमें उसके पिता और परिवार के सदस्य भी भाामिल थे। गदर पार्टी के सबसे युवा क्रांतिकारी, **'करतार सिंह सराभा'** से भी वे बहुत अधिक प्रभावित हुए थे। और उनकी फोटो को हमेशा अपने पास रखते थे।[12] सराभा की मृत्यु से उनके जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा और मृत्यु के प्रति वे निर्भीक हो गए। सराभा को कम आयु होने के कारण जज उन्ह कम सजा देना चाहता था लेकिन उनको देश भक्ति व निडरता को देखते हुए उन्हें फांसी की सजा सुनवाई गई। उस समय वे मात्र 19 वर्श के हंसते–2 फांसी पर चढ़ गए थे। भगत सिंह ने उन्हें अपना आदर्श मान लिया था और भगत सिंह ने उनकी फांसी पर 'चांद' नाम का अंक भी लिखा था।[13]

---

[11] के.सी. यादव, **वाय आई एम एथिश्ट**, हॉप पब्लिकेशन, गुड़गांव, 2005, पृ. 32
[12] एम.एम. जुनेजा, **पूर्वोक्त**, पृ. 29
[13] चमन लाल, **भगत सिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज**, आधार प्रकाशन, पंचकूला, 2004, पृ. 15

जब भगत सिंह मात्र 8 वर्श के थे तब 'गदर पार्टी' का आन्दोलन पहली बार स्पश्ट वैचारिक क्रांति का स्वरूप साथ लेकर आया। इस आन्दोलन ने परंपरा से जुड़े रहने के लिए 1857 में प्रयुक्त शब्द 'गदर' को अपनी पार्टी के नाम से जोड़ा। अब यह आन्दोलन पूरी तरह उपनिवेशवाद विरोधी व सामंतवाद विरोधी था। अब वह एक क्रांतिकारी आन्दोलन बन चुका था।

भगत सिंह का बचपन व उसके बाद का समय के दौरान पूरे विश्व में क्रांतियों और उफान का दौर था।

सन् 1914 में प्रथम विश्व युद्ध अनायास भुारू हो गया। भारत के क्रांतिकारियों को इस सुनहले अवसर की तलाश थी। रास बिहारी बोस के नेतृत्व में उत्तरी भारत के क्रांतिकारीयों में एकता स्थापित हो गई थी और परस्पर सहयोग के काम करने के लिए वे सहमत हो चुके थे।

अमेरिका और कनाड़ा में भारतीय क्रांतिकारियों को संगठित करने और नेतृत्व प्रदान करने का कार्य लाला हरदयाल, बाबा गुरूदत्त सिंह और अन्य लोग कर रहे थे और पिछले कई वर्शों से अमेरिका और कनाड़ा में निवास करने वाले भारतीयों को क्रांतिकारी जीवन के लिए संगठित करने का वे प्रयास कर रहे थे।[14] करतार सिहं सबेस अधिक उत्साही कार्यकर्त्ता था। गदर पार्टी 'गदर' नामक समाचार पत्र निकलती थी जिसका अमेरिका

---

[14] **पूर्वोक्त**,पृ. 13

तथा कनाड़ा में बसे भारतीयों के बीच काफी प्रसार था तथा क्रांतिकारी पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा पंजाब में इसे खूब प्रसारित किया जाता था।[15]

यूरोपीय महायुद्ध अब पूरी तरह खत्म हो चुका था। जर्मन सेना की भाानदार सफलता ने अमेरिका स्थित गदर पार्टी के कार्यकर्त्ताओं की भावनाओं को प्रज्जवलित कर दिया, उनके धैर्य का बांध टूट गया।

वे जब जहाज से भारत के लिए रवाना हुए तथा उनमें से कई अपने साथ अस्त्र–शस्त्र भी लाये। चूंकि गदर पार्टी अमेरिका में खुले आम कार्य कर रही थी, अतः भारत की विदेशी सरकार ने उन कार्यकर्ताओं के विरूद्ध शीघ्र कदम उठाये। हजारों की संख्या में वे पंजाब के नजरबंदी शिविरों में भेज दिये गये। परन्तु अनेक लोग बच निकले और उन्होंने पंजाब में एक शक्तिशाली क्रांतिकारी आंदोलन संगठित किया।

गदर पार्टी से सम्बंधित पंजाबी क्रांतिकारियों में अनेक निःस्वार्थ देश भक्त थे। उनके कार्य, शांत व्यवहार और फांसी के तख्त पर उनके महान त्याग ने भगत सिंह के मन में गहरा प्रभाव डाला बीस वर्षीय छात्र करतार सिंह सराभा तथा भाई प्यारा सिंह, जो फांसी पर लटका दिये गये, ने भगत सिंह को विशेष रूप से प्रभावित किया। भगत सिंह ने उन दोनो के प्ररेणा–दायक जीवन–चरित्र लिखे।[16] इन क्रांतिकारियों ने देश–भक्ति और

---

[15] विकास नारायण राय, **पूर्वोक्त**, पृ. 9

[16] **पूर्वोक्त,**पृ. 14

त्याग की जिस भावना की चिंगारी प्रज्जवलित की, उसे भगत सिंह और उनकी पार्टी ने आत्मसात कर अपनी विरासत को अधिक दैदीप्यमान बना दिया।

सन 1919 में जलियांवाला बाग की घटना से भारत के स्वंतत्रता आंदोलन में एक नया मोड आ गया था। सरकारी आंकड़ों के हिसाब से जरैनल आर.ई.डी. डायर ने 1200 के लगभग लोगों की मौत के घाट उतार दिया था और 2000 के आस–पास घायल हो गये थे।[17] भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में यह सबसे बड़ा नरसंहार माना गया। क्योंकि इसमें मरने वालों की बड़ी संख्या में महिलाओं और बच्चों की थी।

महात्मा गांधी ने इस घटना की निंदा करते हुए कहा कि इस घटना ने सभी भारतवासियों के मन में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक विद्रोह पैदा कर दिया है।[18]

इस घटना से भगत सिंह बहुत स्तब्ध हो गये थे उस समय वह केवल 12 वर्श के थे।

प्रोफेसर एम.एस.जे. वारैच के भाब्दों में एक 12 वर्ष के लड़के को जलियांवाला बाग की घटना ने दिमाग, शरीर और आत्मा को झकझोर कर दिया था।[19]

---

[17] एम.एम. जुनेजा, **पूर्वोक्त**, पृ. 32

[18] **पूर्वोक्त**, पृ. 33

13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में **जनरल डायर** द्वारा किए गए नरसंहार ने बारह वर्ष के भगत सिंह को इतना आंदोलित किया कि वह घर में बिना बताए हो जलियांवाला बाग पहुंच गए और शहीदों के खून से सनी मिट्टी को चूमकर उसे एक बोतल में डालकर अपने साथ घर ले आए।[20]

जब भगत सिंह पर कोर्ट में ट्रायल चल रहा था तो उन्होंने कहा जनरैल डायर ने सैंकड़ों बेकसूर लोगों को मौत की नींद सुला दिया। परन्तु उस पर कोई केश नहीं चलाया गया बल्कि अंग्रेजी सरकार के अफसरों ने उसको लाखों रूपए ईनाम में दिए।[21]

इस बात का इतिहास गवार है कि स्वतंत्रता आन्दोलन में सबसे प्रसिद्ध क्रांतिकारी शहीद करतार सिंह सराभा और भगत सिंह है जिन्होंने बहुत छोटी आयु में अग्रेजों के विरूद्ध बदला लेने का जो वादा किया था उसको निभाया भी था।

भगत सिंह की आयु 14 वर्ष की शायद हुई होगी, फिर भी देश सेवा की भावना उनमें इतनी प्रबल थी कि वे शीघ्र हो पंजाब के विभिन्न क्रांतिकारी संस्थाओं के संपर्क में आ गये।[22] सन 1922 असहयोग आंदोलन

---

[19] **पूर्वोक्त,**पृ. 32
[20] अवतार सिंह जसवाल, **आजादी की लड़ाई**, अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2012, पृ. 168
[21] एम.एम. जुनेजा, **पूर्वोक्त,**पृ. 33
[22] **पूर्वोक्त,**पृ. 18

की असफलता के बाद कई नौजवानों ने महात्मा गांधी के बताए गये रास्ते से हटकर अलग रास्ता अपनाने की ठानी। उस समय तक पंजाब में बब्बर अकाली नामक एक संस्था निर्माण हो चुका था। उनके देश की स्वाधीनता के लिए अपनाए गये तरीकों को बहुत से लोग पंसद नहीं करते थे, परन्तु उनमें कई लोग महान आचारण वाले थे। इसके पूर्व भी लाहौर षड़यंत्र केस में पंजाब के सिखों ने जिस त्याग, वीरता और दुःख सहने की क्षमता का परिचय दिया था। उन गुणों ने भी इस काल के कल्पनाशील युवकों को अत्यधिक प्रभावित किया। इन क्रांतिकारी गतिविधियों ने भगत सिंह को बहुत प्रभावित किया। इस बात की पुष्टि उनके लेखों से होती है।

सचिन सन्याल जब क्रांतिकारी आंदोलन को प्रसारित करने के लिए पंजाब गये जहां उनकी मुलाकात आंदोलन से संबधित श्रीमति पार्वती देवी नामक एक वयोवृद्ध ने प्रोफेसर जयचंद विद्यालंकार से करायी। शीघ्र ही जयचंद पंजाब में सचिन के सहायक हो गये। प्रोफेसर जयचंद के माध्यम से सचिन का परिचय भगत सिंह और भगवतीचरण नामक दो किशोरों से हुआ।

सचिन इन दोनों किशोरों से बहुत प्रभावित हुए। सचिन के पूछने पर भगत सिंह तत्काल घर छोड़कर सचिन की आज्ञा का पालन करते हुए कहीं भी जाने के लिए तैयार थे। सचिन ने भगत सिंह को कानपुर भेजा

वहां उन्होंने जोगेशचंद्र चटार्जी, की देख–रेख में ट्रेनिंग प्राप्त की और कानपूर में आकर भगत सिंह ने प्रताप प्रैस में नौकरी कर ली।[23] उस प्रैस में क्रांतिकारी सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य पहले ही काम कर रहे थे। गणेश शंकर विद्यार्थी, जिन्होंने कानपूर में आपस में लड़ने वाले हिन्दू मुसलमानों के बीच शांति और सौहार्द स्थापित करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी, उस समय वे प्रताप प्रैस के सर्वे–सर्वा थे। यद्यपि वे सुरेश भट्टाचार्य और भगत सिंह के बीच मैत्री संबंध स्थापित करने के इच्छुक न थे, परन्तु सचिन सयाल के साथ अपनी मित्रता के कारण उन्होंने उन दोनों किशोरों की मदद की तथा स्वयं भी उनके मित्र हो गये। जब लाहौर षड़यंत्र केस चल रहा था, तब विद्यार्थी भगत सिंह तथा अन्य भूख हड़ताली कैदियों से मिलने गये। यह बात गुप्त रखी गयी थी कि विद्यार्थी और भगत सिंह मित्र थे। भगत सिंह के लेख 'बलवंत' के उपनाम से प्रताप में प्रकाशित होते थे।

कानपुर से भगत सिंह के क्रांतिकारी जीवन का शुभारंभ हुआ। इसके उपरांत वे पूर्ण व्यवस्थित क्रांतिकारी पार्टी के अभिन्न अंग बन गये। इसके पश्चात् उनका जीवन क्रांतिकारी आंदोलन का ही एक भाग बन गया।

1924 तक कई गुप्त क्रांतिकारी संस्थाओं का उदय हो गया था। बंगाल के पुराने क्रांतिकारियों ने स्वयं को संगठित करना शुरू कर दिया।

---

[23] रवि रंजन और एम.के. सिंह, **पूर्वोक्त,** पृ. 21

किया करते थे।[25] उस समय पार्टी को यू. पी. शाखा का मुख्यालय कानपुर था।

श्री जोगेशचंद्र चटर्जी पार्टी के प्रमुख व्यवस्थापक थे जिनकी देख–रेख में भगत सिंह ने काम करना शुरू किया।

9 अगस्त 1925 के दिन प्रसिद्ध **काकोरी ट्रेन डकैती** की घटना घटी जिसमें एच. आर. ए. के सदस्यों ने चलती रेलगाड़ी को लखनऊ के निकट काकोरी नामक स्थान पर रोक कर उस सरकारी खजाने को लूट लिया जिसे उस गाड़ी में ले जाया जा रहा था। इस घटना के कुछ समय पहले यू. पी. शाखा की रिपोर्ट लेकर जोगेशचंद्र कलकत्ता में होने वाली केन्द्रीय कमेटी की मीटिंग में भाग लेने जा रहे थे। सम्पूर्ण रिर्पोट सांकेतिक भाषा में लिखी गयी थी। चटार्जी को हावड़ा पुल पर पकड़ लिया गया तथा वह रिर्पोट पुलिस के कब्जे में आ गई। पुलिस ने सांकेतिक भाषा को पढ़ लिया। इस प्रकार प्रथम बार बंगाल की पुलिस को यू. पी. की क्रांतिकारी पार्टी के बारे में खबर मिली। जोगेशचंद्र ने ट्रेन डकैती की कार्य–प्रणाली का भी अध्ययन किया। जोगेशचंद्र के पास से जब्त की गयी रिपोर्ट तथा काकोरी रेल डकैती की कार्य प्रणाली के अध्ययन से पुलिस को यह संकेत प्राप्त करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई कि इन वारदातों के पीछे किसका हाथ है।

---

[25] **पूर्वोक्त**,पृ. 173

ठीक इसके पश्चात जब काकोरी रेल डकैती की घटना घटी तब क्रांतिकारी पार्टी के रहस्यों का पर्दाफाश हो गया। इस समय भगत सिंह लाहौर वापस चले गये।

काकोरी कांड में जिन चार प्रमुख क्रांतिकारियों को फांसी दी गई। वे रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला, रोशन सिंह और राजिन्द्रनाथ लहरी थे। सचिन सन्याल और जोगेश चटर्जी को आजीवन कालापानी की सजा मिली। इस सारी घटना का भगत सिंह के दिमाग पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था।

अध्याय– 3

भगत सिंह के समय में भारत की आर्थिक व सामाजिक स्थिति

भगत सिंह का जन्म 1907 में हुआ था और 1931 में उन्हें फांसी दे दी गई थी। इस समय के दौरान भारत की आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन करना और उनका मूल्यांकन कर इस अध्याय का विषय है।

भगत सिंह का क्रांतिकारी जीवन 1920 के आस पास से शुरू हुआ था। उस समय भारत में अंग्रजों के खिलाफ बहुत बड़े–बड़े आन्दोलन चले हुए थे। जिनके पीछे आर्थिक व सामाजिक कारण मौजूद थे।

भगत सिंह के समय से पहले भी भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन हो चुके थे। जिससे भारत में राष्ट्रवाद का उदय हो चुका था। इसकी शुरूआत 1857 के आन्दोलन से मानी जाती है। इन सभी आन्दोलन के पीछे आर्थिक व सामाजिक आन्दोलन का सहयोग रहा है। जिसने भारत के लोगों में जागृति लाने का काम किया था।[1]

सन् 1910–1920 के दौरान भारत की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो चुकी थी। किसानों की हालत बहुत खराब थी जिस कारण उद्योग ठप्प हो चुके थे। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री राधाकमल मुखर्जी के अनुसार 1910–1920 के दशक में भारत में

---

[1] एम.एल धवन, **भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन**, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 2003, पृ. 3

जितना अन्न पैदा हुआ वह उसकी आवश्यकता से कम था और औसत वार्षिक कमी एक करोड़ टन थी।[2] प्रथम विश्व युद्ध के कारण भारत में अनाज का अभाव और बढ़ गया था जिसके परिणाम यहां भुखमरी और लोगों में असंतोष की भावना ने जन्म लिया। भारत के इतिहास में यह पहली बार हुआ था कि सन 1900 तक यहां 18 बार अकाल पड़ चुके थे।[3]

इन सब हालात के पीछे ब्रिटेन सरकार की आर्थिक नीतियां थी जो भारत की अर्थव्यवस्थाा को पूरी तरह अपने कब्जे में करना चाहती थीं। इसलिए उन्होंने यहां के लघु उद्योगों को नष्ट किया था और भारत को केवल कच्चे माल के लिए उपयोग करते थे।[4]

युद्ध के दौरान भारत की तबाही बढाने में निर्यात और आयात के दामों में असमान वृद्धि भी सहायक हुई। भारत जो चीजें बाहर भेजता था उनके दाम तो नाममात्र के बढ़े लेकिन वह जो चीजें बाहर से मंगवाता था उनके दाम ढ़ाई गुणा से ज्यादा बढ़ गए।[5] इस अंतर को समझने के लिए मूल्यवृद्धि के निम्नलिखित आंकड़ो पर नजर डालिए जो 61 किस्म के आयात माल और 50 किस्म के निर्यात माल की मूल्यवृद्धि को लेकर किए गए है :

---

[2] अयोध्या सिंह, **भारत का मुक्ति संग्राम**, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2003, पृ. 314
[3] एम.एल धवन, **भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन**, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 2003, पृ 2
[4] **पूर्वोक्त**, पृ. 3
[5] ए.आर. देसाई, **भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि**, मैकमिलन इंडिया, 2007, पृ. 66

(1913–14–100)

	1914–15	1915–16	1916–17	1917–18	1918–19
आयात	101	126	170	218	268
निर्यात	102	103	117	123	150

उपर्युक्त आंकड़ो से स्पष्ट है कि वस्तुओं की कीमत 1913–14 को कीमत की तुलना में 1917–18 में सिर्फ 25 प्रतिशत और 1918–19 में 50 प्रतिशत ज्यादा थी लेकिन उसी दौरान आयात की गई वस्तुओं की कीमत 1913–14 की कीमत की तूलना में 111 और 168 प्रतिशत ज्यादा थी।

इन सबने मिलकर किसानों को बुरी तरह तबाह किया। युद्ध के समाप्त होने तक अकाल और इनफलुगुना की महामारी आ गई थी।

इस कारण से भारत में 20 से 30 लाख लोग मरे। युद्ध के तुरंत बाद लाखों किसान अपनी जमीन से बेदखल हो गए। भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था पूरी तरह से अस्त–व्यस्त हो गई थी। क्योंकि ब्रिटेन की सरकार भारतीय किसानों पर अधिक कर लगाना लगाती थी और किसानों पर अत्याचार भी करती थी। भूमि व्यवस्था में किये गए परिवर्तनों का परिणाम यह हुआ कि भारतीय कृषि निर्वाह कृषि बनकर रह गई। लगान की अत्याधिक राशि होने के कारण किसान अपनी भूमि जमींदारों या

साहुकारों के हाथों बेचने के लिए विवश हो गए।[6] इस व्यवस्था के कारण खेतिहार मजदूरों के वर्ग का जन्म हुआ।

छोटे किसानों की दशा भी इन्हीं मजदूरों के समान थी। इसके बाद ब्रिटेन सरकार ने भारतीय कृषि का वाणिज्यकरण करने के लिए नई आर्थिक नीतियां लेकर आयी। भारत में ब्रिटिश सरकार ने उद्योगपतियों और सौदागरों के दबाव में आकरा कृषि के वाणिज्यकरण की नीति को बहुत सोच समझ कर लागू किया। जिससे भारतीय कृषि से ब्रिटिश उद्योगों को अधिक से अधिक कच्चा माल प्राप्त हो सके। किसानों को अधिक बाजार मूल्य देकर अनाज के स्थान पर वाणिज्य फसल पैदा करने के लिए उत्साहित किया गया। फलस्वरूप भारत में खाद्य उत्पादन की कमी हो गई।[7] रेलों तथा अन्य यातायात के साधनों के विकास से कृषि के वाणिज्यकरण की प्रक्रिया और तीव्र हो गई और किसान विश्व बाजार के लिए उत्पादन करने लगा। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत में ब्रिटिश शासन की आर्थिक नीति भारत का आर्थिक शोषण करने के लिए बनाई गई थी। इसके साथ प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारत में कल कारखानों की संख्या व उनके उत्पादन में भी वृद्धि हुई थी। उत्पादन की वृद्धि कारखानों को दिन रात चलाने से और मजदूरों पर ज्यादा

---

[6] एम.एल धवन, **पूर्वोक्त**, पृ. 3

[7] पूर्वोक्त, पृ. 13

बोझा डालकर हुई थी। युद्ध के बाद अनेक नई ज्वांइट स्टॉक कंपनियां बनी।[8] 1914–15 और 1918 के बीच के चार वर्षों में भारत में पंजीकृत ज्वांइट स्टॉक कंपनियों की संख्या में वृद्धि 233 प्रतिशत थी और उनकी प्राप्त पूंजी में वृद्धि 26 प्रतिशत थी। इसके बाद के वर्षों में यह वृद्धि और तेज हो गई साथ ही विदेश में पंजीकृत किन्तु भारत में रोजगार करने वाली कंपनियों की संख्या भी बढ़ी। किंतु अधिकांश भारतीय कंपनियां व्यापार बीमे और बैंकिंग के क्षेत्र में बढ़ी क्योंकि ब्रिटिश यह नहीं चाहते थे कि भारतीय पूंजीपति अपनी पूंजी का कोई बड़ा हिस्सा कल कारखानों में लगाए।[9] लेकिन भारतीय पूंजी अधिकतर कपड़ा मिलों में लगी हुई थी। युद्ध उनके लिए वरदान सिद्ध हुआ, युद्ध आरंभ होने के पहले भारत के बाजार पर विदेशी कपड़ा छाया हुआ था। युद्ध के दौरान उसका आयात बहुत कम पड़ गया था।[10] 1913–14 में जितना विदेशी कपड़ा भारत आया था, 1917–18 में उसका आधा भी न आया। इसके साथ ही भारत की कपड़ा मिलों को भारतीय सेना और ब्रिटिश सेना के लिए जरूरी कपड़ों के बड़े–बड़े आर्डर दिये गए। इस लिए युद्ध के दौरान कपड़ा मिलों का उत्पादन तेजी से बढ़ा। इससे मजदूरों में असंतोष भी पनपा था क्योंकि सन 1911 तक उनके काम के घंटों को लेकर नियंत्रण की कोई व्यवस्था नहीं थी और बीमारी, बुढापा, बेरोजगारी, दुर्घटना या आक्समिक मृत्यु के लिए किसी

[8] वी. के. अग्निहोत्री, **भारतीय इतिहास**, एलाइड पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड, दिल्ली, 2011, पृ 248
[9] अयोध्या सिंह, **पूर्वोक्त**, पृ. 314
[10] पूर्वोक्त, पृ. 316

कार का सामाजिक बीमा नहीं था।[11] सन 1889 से 1929 के बीच कारखानों की स्तविक मजदूरों में गिरावट आयी। सन 1880 और 1890 के बीच मिलने वाली जदूरी के स्तर को 20वीं शताब्दी के तीसरे दशक में पुनः लाना केवल तब संभव आ जब एक शक्तिशाली मजदूर संघ के आन्दोलन का विकास हो गया और यह तब जब श्रम उत्पादकता में 50 प्रतिशत की वृद्धि हो गयी। परिणामस्वरूप यह क एक औसत मजदूर, जिंदा रहने के लिए जितना आवश्यक है उससे भी कम पर ी रहा था। ब्रितानी शासन में भारतीय मजदूरों की हालत को निचोड़ के रूप में स्तुत करते हुए जर्मनी के **प्रसिद्ध इतिहासकार जुरगेत ने सन 1938 में लिखाः** आधा पेट भोजन और बिना हवा, रोशनी और पानी के जानवरों की तरह रहने ाला भारत का औद्योगिक मजदूर विश्व के औद्योगिक पूंजीवाद में सबसे अधिक ोषित प्राणी है।"

दूसरी तरफ चाय और काफी के बागानों में हालत इससे भी खराब थी। ये ागान क्षीण आबादी वाले ऐसे क्षेत्रों में स्थित थे जहां की जलवायु स्वास्थ्य को ख़राब करने वाली थी, लेकिन बागानों के मालिक इतनी पर्याप्त मजदूरी नहीं देते थे के बाहर के मजदूर आकर्षित हो सकें। इसकी जगह वे मजदूरों की भर्ती में झूठे ायदे और जाल फरेब करते थे। मजदूरों को बागानों में बिल्कुल गुलामों की तरह

---

[11] विपिन चन्द्र, **पूर्वोक्त**, पृ. 24

पड़े रहने के लिए वे सख्ती, मारपीट और शारीरिक यातना का सहार लेते थे। सरकार ने उन्हें पूरी सहायता दी और दंढ के ऐसे कानून बानाये जिनका सहारा वे बागान के मजदूरों को अपने उत्पीड़नकारी नियंत्रण में रख सकें।[12]

इससे मजदूरों में भी साम्राज्य विरोधी आन्दोलन पैदा हुआ जिसकी रीढ़ में मुख्य भूमिका मजदूर आन्दोलन की रही थी। इसके बाद जब अंग्रेजों ने छोटे–मोटे सरकारी कर्मचारियां की बड़ी संख्या में भर्ती की और नये स्कूल तथा आदालतों के खुलने से नयी नौकरियों की जगह बनी तो एक विशेष वर्ग के लोगों को रोजगार के नये अवसर मिले। देश के भीतर और विदेशी व्यापार में अचानक वृद्धि होने के कारण हर स्तर पर एक दुकानदार वर्ग का उदय हुआ। लेकिन जल्दी ही एक अर्द्धविकसित उपनिवेशित अर्थतंत्र के तर्क ने प्रभावशाली ढंग से अपने आग्रह को सामने रखा। जिससे बेरोजगारों की संख्या बढ़ रही थी और जिन्हें नौकरी मिल रही थी उन्हें भी एहसास हुआ कि अच्छे पदों पर केवल उच्च वर्ग या ब्रिटेन के लोगों के लिए ही आरक्षित है। इससे मध्य व निम्न वर्ग के भारतीयों ने जल्द ही यह महसूस किया कि केवल आर्थिक दृष्टि से विकसित और समाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से आधुनिक देश हो उन्हें एक सार्थक और उपयुक्त जीवन बिताने के आर्थिक और

---

[12] एस.एल धवन, **पूर्वोक्त**, पृ 24

सांस्कृतिक अवसर दे सकता है।[13] वही तेजी से बढ़ती गरीबी से, बेरोजगारी से और सामाजिक आर्थिक क्षति से बचा सकता है।

इसी तरह भारत में ब्रिटेन सरकार के आने के बाद कारखाने अवश्य खुले लेकिन इसका प्रभाव दस्तकार और लघु उद्योगों पर बहुत बूरा पड़ा। औद्योगिक प्रगति लघु उद्योगों के नाश से कम थी। कुछ दिन बाद कल–कारखानों और लघु उद्योगों में काम करने वालों की संख्या बढने की बजाए घट गई थी।[14] जनगणना के अनुसार ऐसे कुल मजदूरों की संख्या 1911 में 1.75 करोड़ थी लेकिन 1921 में वह 1.53 करोड़ रह गई इससे स्पष्ट होता है कि अंग्रेजो की नीति भारत के औद्योगिकीकरण को नही बल्कि उसे रोकने की थी।

इसी दौरान चटकलों और कपड़ा मिलों के मालिकों ने अर्थात ब्रिटिश पूंजीपतियों और भारतीय बड़े पूंजीपतियों ने बेशुमार मुनाफा कमाया। चटकलों के मालिकों का, जो ब्रिटिश पूंजीपति थे मोटा मुनाफा 1913 में 2.45 करोड़ था और 1918 में वह बढ़कर 12.29 करोड़ रूपये हो गया था।[15] ब्रिटेन के चटकलों के केन्द्र डंडी से ब्रिटिश मजदूरों के संगठन के प्रतिनिधि 1924–25 में कलकत्ता आए थे। इन प्रतिनिधियों ने हिसाब कर बताया कि भारत को चटकलों के मालिकों ने

---

[13] अयोध्या सिंह, **पूर्वोक्त**, पृ. 317
[14] विपिन चन्द्र, **भारत का स्वतंत्रता संघर्ष**, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2007, पृ. 138
[15] अयोध्या सिंह, **पूर्वोक्त**, पृ. 319

1915–24 में अपनी कुल पुंजी का 90 प्रतिशत मुनाफा प्रतिवर्ष कमाया था। उन्होंने लिखा, जब संरक्षित कोष और लाभ एक साथ जोड़ दिए जाते हैं तो दस वर्षो में हिस्सेदारों का कुल लाभ 30 करोड़ पौड़ को विशाल धनराशि या पूंजी का 90 प्रतिशत प्रतिवर्ष हो जाता है। 3 लाख 27 हजार मजदूर आजकल 12.5 पौंड़ प्रतिवर्ष की औसत मजदूरी पर काम करते हैं। 3 लाख मजदूरों से दस साल में 30 करोड़ पौड़ के मुनाफे के माने 1000 पौड़ प्रति मजदूर पर प्रतिवर्ष और चूंकि औसत वार्षिक वेतन लगभग 12.5 पौंड प्रति मजदूर है। इसलिए इसका मतलब है कि औसत वार्षिक लाभ वेतन के बिल का आठ गुणा था। कपड़ा मिलों के मालिको ने भी जिनमें अधिकांश भारत के बड़े–बड़े पूंजीपति थे, बड़ा मुनाफा बटोरा। बुकानन के अनुसार 42 कपड़ा मिलों के मालिक 35 लिमिटेड कंपनियों ने 1920 में 40 प्रतिशत और उससे ज्यादा लाभांश बांटा। इनमें से 14 मिलों के मालिक 10 कंपनियों ने 100 प्रतिशत या उसने ज्यादा लाभांश दिया। दो मिलों ने 200 प्रतिशत से ज्यादा लाभांश दिया। 1921 में 41 कंपनियों ने 100 प्रतिशत या उससे ज्यादा लाभांश बांटा।

चटकलों और कपड़ा मिलों के अत्याधिक मुनाफों का सबसे बड़ा और बुनियादी कारण मजदूरों का अत्याधिक शोषण था इसके बाद सबसे बड़ा कारण कच्चे माल और तैयार माल के मूल्यों के बीच आकाश पाताल का अंतर था।[16] सही

[16] अयोध्या सिंह, **पूर्वोक्त**, पृ. 318

शब्दों में वह कच्चा माल पैदा करने वाले किसानों का शोषण था भारतीय अर्थशास्त्री **सी.एन.वकील** और **एल.के.मुरंजन** ने बताया कि 1911–1915 की तुलना में कपास की कीमत 78 प्रतिशत बढ़ी जबकि उसी दौरान कपड़े की कीमत 108 प्रतिशत बढ़ी।[17]

बड़े–बड़े देशी विदेशी पूंजीपतियों ने युद्ध के दौरान बेशुमार मुनाफा कमाया लेकिन मजदूरों की हालत क्या हुई? उनका वास्तविक वेतन बढ़ा जरूर लेकिन दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं की कीमत में वृद्धि इस वेतन वृद्धि से कहीं ज्यादा थी।

1917 तक मंहगाई यद्यपि डेढ़ गुणा हो गई थी लेकिन मजदूरों का वेतन जरा भी नहीं बढ़ा इसके बाद हडतालों की वजह से वेतन कुछ बढा लेकिन मंहगाई की तुलना में वह नाकाफी था। भारत में महंगाई के अनुसार 1914 की तुलना में 1919 में 83 प्रतिशत ज्यादा वेतन होना चाहिए था लेकिन वेतन में वृद्धि सिर्फ 25 प्रतिशत हुई थी। मजदूरों और किसानों को इस बिगड़ती हालत से युद्ध के बीच विरोध बहुत तेज हो गया। राजनीतिक तथा अर्थनीति के अधिकार के दावेदार राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और ब्रिटिश साम्राजियों के बीच भी विरोध तेज हुआ। इसके अलावा देश के पूंजीपतियों तथा मजदूरों के बीच, जमीदारों और किसानों के बीच

[17] **पूर्वोक्त**, पृ. 319

रियासती जनता और राजाओं नवाबों के बीच भी विरोध बढा जिस कारण मजदूरों और किसानों के आन्दोलन हुए जिन्होंने कहीं–जगहों पर सशस्त्र संग्राम का रूप धारण किया।[18]

इन आर्थिक बदलावों का सीधा सा प्रभाव भारत के समाज पर पड़ रहा था। जिससे भारतीय समाज में सामाजिक स्थिति भी बिगड़ रही थी और वह बहुत ही दयनीय होती जा रही थी।

भगत सिंह के समय में भारत में सामाजिक स्थित के हालात भी बहुत खराब थे। भारत की आजादी को लेकर अनेक सामाजिक और राजनैतिक आन्दोलन भी चले हुए थे। जिनसे प्रभावित हुए बिना भगत सिंह नहीं रह सकते थे।

सन् 1914 में विदेशी धरती 'गदर' आन्दोलन की शुरूआत हुई थी जो भगत सिंह के समय का सबसे पहला और बहुत प्रभावशाली समाजिक आन्दोलन था। उस समय में गदर पार्टी के द्वारा समाजिक और राजनैतिक आन्दोलन चलाऐ जा रहे थे। इसकी प्रकृति भी धर्म निरपेक्ष और छुआछूत व जात पात के खिलाफ रहती थी जो आगे चलकर गदर पार्टी ने समाजवादी और धर्मनिरपेक्षता का रास्ता अपना लिया था।[19]

---

[18] वी. के. अग्निहोत्री, **पूर्वोक्त**, पृ 253

[19] जोश जियोर्ज एंड मनोज कुमार, **रिथिकींग रैडिकनीज्स इन इंडिया सोसाईटी,** रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 30

इस समय तक भारत की समाजिक स्थिति भी काफी बदल चुकी थी। क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने उद्योग धंधे व सेवा क्षेत्र में भी निवेश किया था। जिसमे रेल, डाक और बैंक आदि खुल चुके थे। जिससे भारत की सामाजिक स्थिति में काफी परिवर्तन हो रहा था। जिसमें पुराने उत्पादन संबंध और वर्ग नष्ट हो रहे थे और नए वर्ग और उत्पादन संबधं बन रहे थे।

वैसे तो यह प्रक्रिया 1813 से शुरू हुई थी जब ब्रिटिश उद्योगिक पूंजी ने भारत को लूटना शुरू कर दिया। इसी वर्ष से ब्रिटिश कल कारखानों में बने माल ने भारत पर अपना आक्रमण आरंभ किया और यह आक्रमण जल्दी ही बहुत तेज हो गया और उसने भारत की पुरानी अर्थव्यवस्था को ध्वस्त कर दिया।[20] इस आक्रमण ने किस तरह जोर पकड़ा और उग्र रूप धारण किया। इस पर कार्ल मार्क्स ने कहा, सन 1818 और 1836 के बीच ग्रेट ब्रिटेन से हिन्दुस्तान भेजे जाने वाली सूत का परिमाण 5200 गुणा बढ़ गया। 1824 में अंग्रेजी मलमल का हिन्दुस्तान को निर्यात ज्यादा से ज्यादा दस लाख गज रहा होगा। पर 1837 में बढ़कर 6 करोड़ 40 लाख से भी ज्यादा हो गया। ब्रिटिश शासन का सबसे बुरा परिणाम यही नहीं था कि हिन्दुस्तान के ऐसे नगर, जो कपड़े के उद्योग के लिए प्रसिद्ध थे तबाह हो गए थे,

[20] अयोध्या सिंह, **पूर्वोक्त**, पृ. 20

ब्रिटिश भाप ईंजन और विज्ञान ने हिन्दुस्तान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक कृषि उत्पादन तथा हस्त के समागम को जड़ से उखाड़ फेंका था।

अगर हम विचार करें कि ब्रिटिश शासन ने भारत के आर्थिक और सामाजिक क्षेत्र में क्या–क्या परिवर्तन किए? सबसे पहले भूमि और कृषि व्यवस्था को लीजिए। जिस ब्रिटिश पूंजीवाद ने अपने देश में सांमतो व्यवस्था को नष्ट किया था। उसी ने भारत में आकर उल्टा रास्ता अपनाया। उसने भारत पर ब्रिटेन के ढंग से सांमती व्यवस्था लादी। उसने उत्तर भारत में जमींदारी प्रथा जारी की। जमींदारों का एक नया वर्ग पैदा किया और उन्हें जमीन का मालिक बनाया। दक्षिण भारत में रैयतवारी प्रथा चालू कर किसान को जमीन का मालिक बनाया। इस तरह उन्होंने जमीन को व्यक्तिगत संपत्ति बनाया, जमीन एक बिकाऊ माल बन गई जिसे बाजार में खरीदा बेचा जा सकता था।[21]

इससे वहले स्वायत शासित ग्राम समाज जो काम करता था, वे उसके हाथ से छीन लिए गए। न्याय का काम सरकारी अदालतें, रक्षा का काम सरकारी थाने और जमीन का हिसाब रखने का काम सरकारी पटवारी करने लगे। गांवों की स्वाधीनता समाप्त कर दी गई और ग्राम समाज के सारे काम केंद्रीभूत राज्य के हाथ में सौंप दिये गए। वे बंधन तोड़ डाले गए जो किसान और सामूहिक तौर पर

---

[21] ए.आर. देसाई, **पूर्वोक्त,** पृ. 32

ग्राम से बांधे रखते थे। आवागमन को सुविधा के कारण भारतीय कृषि में एक अन्य महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। इस परिवर्तन को, अन्य उपयुक्त शब्द के प्रभाव में, कृषि का वाणिज्यीकरण कहा जा सकता है।[22]

जो फसल पहले घरेलू इस्तेमाल के लिए तैयार की जाती थी। वह बाजार में बेचने के लिए पैदा की जाने लगी।

एक राष्ट्रीय भारतीय अर्थतंत्र के विकास के लिए यह बात बड़े महत्व की थी। इसने आर्थिक दृष्टि से गांव को भारत के विभिन्न हिस्सों के साथ जोड़कर राष्ट्रीय संहति के लिए भौतिक आधार खड़ा कर दिया।

गांव अपने आसपास के चरागाहों तथा जंगलों की भूमि का इस्तेमाल निःशुल्क किया करते थे।

ब्रिटिश शासकों ने जंगल कानून पास कर ग्राम समाज का यह अधिकार भी छीन लिया। इस कार्य के जरिए भी ग्राम के सामूहिक और स्वायतशासित रूप पर आघात किया गया।

स्वायतशासित समाज से बदलकर केंद्रीभूत राज्य एक प्रशासकीय इकाई बन गया। वह राष्ट्रीय अर्थतंत्र का एक निर्भर आर्थिक अंश बन गया। सम्मिलित आर्थिक

---

[22] **पूर्वोक्त,** पृ. 46

स्वार्थ और तज्जन्य सहयोगी संबंधों पर आधारित सामुदियक ग्रामीण जीवन को बदल प्रतियोगिता और संघर्ष पर आधारित नए जीवन रूप विकसित हुए।

इसके बाद ब्रिटिश शासकों ने सत्ता का दुरूपयोग कर भारत के प्राचीन उद्योग–धंधों को नष्ट कर दिया। सबसे पहले कपड़ा उद्योग को लीजिए। जिसके लिए भारत संसार भर में विख्यात था। पहले ज्यादा शुल्क लगाकर और फिर कानून बनाकर उन्होंने भारतीय कपड़े को ब्रिटेन के बाजार से निकाला फिर यूरोप और अन्य देशों के बाजार से और आखिर में खुद भारत के अंदर उसका पटरा बैठा दिया।

भारत के बाजार पर ब्रिटिश पूंजीपतियों के कारखानों में बना कपड़ा छा गया। इसमें भारत के रेशमी और ऊनी कपड़े, लोहे, कांच, चमड़े, चीनी आदि के उद्योग नष्ट किए गए। जो भारत पहले उसने उद्योगों का तैयार माल ब्रिटेन और अन्न देशों को भेजता था, वह अब ब्रिटेन के कारखानों के तैयार माल का बाजार बन गया और उन्हें कच्चा माल भेजने लगा।

खासकर 1833 से कच्चे माल का निर्यात तेजी से बढ़ा। कपास 1813 में लगभग एक लाख 12.5 हजार मन, 1833 में लगभग 4 लाख मन और 1844 में लगभग 11 लाख मन भेजी गई। ऊन का निर्यात 1833 में लगभग 4625 मन और

1844 में 33,750 मन था। इसी दौरान तेलहन का निर्यात 1528 मन से बढ़कर लगभग 1,71,745 मन हो गया। खाद्यान्न का निर्यात 1845 में 8.58 लाख पौंड था, वह बढकर 1858 में 38 लाख पौंड, 1877 में 79 लाख पौंड था, वह बढकर 1858 में 38 लाख पौंड, 1877 में 79 लाख पौंड और 1901 में 93 लाख पौंड हो गया।

इस सारे घटनाक्रम पर **एल. नटराजन** अंग्रेजी शासन व्यवस्था में किसानों को किस तरह प्रताड़ित और शोषण किया जाता था, उस संबंध में लिखते हैं कि इस बीच भारतीय समाज के समूचे समाजिक और आर्थिक आधार में एक जबरदस्त रद्दोबदल हो रहा था। अंग्रेजों के जमीन के बन्दोबस्त, मालगुजारी की ऊंची दरें और एक ऐसी न्याय व्यवस्था जो जनता के हितों के खिलाफ जाती थी। इन सबका फायदा उठाकर, जमीदारों ने आम किसान जनता के ऊपर अपना शिकंजा कसना शुरू कर दिया था।[23]

इस असंतोष ने एक राष्ट्रीयव्यापी आन्दोलन को जन्म दिया जो पूरी तरह से अंग्रेजी सरकार के खिलाफ परिणाम था कि भारत में पहली बार संगठित होकर किसानों और मजदूरों ने बड़ी–बड़ी हड़तालें की थीं।

बी.एन. व जनमेजय सिंह, **भारत में सामाजिक आन्दोलन,** रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2005, पृ. ...–90

इससे भारत की जनता में ब्रिटिश सरकार के प्रति अंसतोष हो गया था। उनकी नई आर्थिक नीतियों के कारण यहां का मजदूर व किसान बहुत बुरी तरह बर्बाद हो रहा था। जिसके परिणाम देश की सबसे बडी राष्ट्रव्यापी हड़ताल सन् 1907 में रेलवे के मजदूरों ने की थी जिसमें 3000 के लगभग मजदूरों ने भाग लिया था।[24] इसके कुछ दिन बाद 18 नवम्बर 1907 को पूर्ण भारत रेलवे के मजदूरों का सबसे बडा संग्राम शुरू हुआ। यह हड़ताल आसनपोल से शुरू होकर इलाहाबाद व टूंडला तक फैल गई थी। हड़ताल इतनी सफल रही कि कोई भी ट्रेन कलकता तक नहीं पहुंच पाई। इसका असर तुरंत कल कारखानों और जहाजों पर दिखाई देने लगा। कोयले के अभाव में कल कारखानों का चलन और वैगनों के अभाव से जहाजों का माल उतारा जाना कठिन हो गया। हडताल क्रमशः फैलती रही बर्दवान, आसनपोल, मुगलसराय, इलाहाबाद, कानपुर, टूंडला, अम्बाला आदि सब स्टेशनों का काम ठप्प हो गया। इसके बाद भारत में सबसे पहली राजनैतिक हड़ताल 22 जलाई 1908 में तिलक को दिये गए 6 साल के दंड के विरूद्ध बंबई के मजदूरों ने छः दिन की हड़ताल की और ब्रिटिश सेना के साथ बंबई की सड़कों पर आमने–सामने की लड़ाई हुई थी।[25]

---

[24] अयोध्या सिंह, **पूर्वोक्त**, पृ. 333
[25] विपिन चन्द्र, **पूर्वोक्त**, पृ.

इसके बाद अगस्त 1917 के अंत तक बंबई के कपड़ा मिल के मजदूरों में भी हड़ताल की लहर शुरू हो गई और अक्टूबर 1917 तक 30 से ज्यादा हडतालें हो चुकी थी।[26] इन सभी हडतालों के पीछे एक ही कारण था कि बढ़ती महंगाई से होने वाले नुकसान को पूरा करने के लिए वेतन बढ़ाया जाए। इन हड़तालों के प्रभाव से वर्कशॉप डाकयार्ड, इंजिनियरिंग, खनिज तेल, टकसाल, छापाखाना, पोर्टट्रस्ट, ट्राम गेल, बिजली, नगरपालिका यहां तक घरो में काम करने वाले मजदूरों में भी फैल गई थी। इन सभी हड़तालों का एक उद्‌देश्य था कि महंगाई की तुलना में वेतन बढ़ाया जाए। इस तरह यह हडताल बंबई ही नहीं पूरे देश में फैल गई थी।

इन हड़तालों से स्पष्ट हो गया था कि अब मजदूरों की चेतना का विकास हो रहा है और वह ब्रिटिश सरकार की नीतियों को समझने लगे थे। इन हड़तालों के माध्यम से मजदूरों ने संगठित होना व संगठन की ताकत को भी पहचानना शुरू कर दिया था। इन हडतालों के प्रभाव से मजदूरों ने तीन साल में वह वेतन वृद्धि प्राप्त की जो वह पिछले तीस सालों में भी प्राप्त नहीं कर पाये थे।[27] 1920 के बाद भारत के मजदूरों का एक अखिल भारतीय संगठन कायम हुआ लेकिन उसका नेतृत्व बहुत दिनों तक सुधारवादियों के हाथ में रहा। भारतीय बुर्जग वर्ग ने इन

[26] अयोध्या सिंह, **पूर्वोक्त**, पृ. 338
[27] **पूर्वोक्त**, पृ. 339

सुधारवादी नेताओं के जरिए मजदूर आन्दोलन को अपने नियंत्रण में रखने की कोशिश की, दूसरी तरफ ब्रिटिशों ने अपने भारतीय दलालों और ब्रिटिश लेबर पार्टी के नेताओं के जरिए भारत के मजदूर आन्दोलन को अपना दुमछल्ला बनाने की कोशिश की, किन्तु मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी भावना इन सब चालों से ज्यादा ताकतवर साबित हुई।[28]

दूसरी तरफ भारत में किसानों के आन्दोलन भी बढ़ रहे थे जिसका कारण ब्रिटिश सरकार की नीतियों को जबरदस्ती से किसानों पर थोपा जा रहा था। किसान आन्दोलन की शुरूआत 'नील विद्रोह' से मानी जाती है। इसके साथ जयंतीय विद्रोह, फुलाग्रही का देगा, कूका विद्रोह, महाराष्ट्र के किसानों का मोर्चा, पूना में वायुदेव बलवंत, फडके के नेतृत्व में विद्रोह और रंपा विद्रोह ऐसे ही विद्रोह थे।[29]

नील किसानों पर अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण इतना अधिक अंग्रेजो और जमींदारों ने किया कि यह विद्रोह अथवा आन्दोलन इतिहास का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बन गया। धमकाकर मारपीट कर नील की खेती करवायी जाती थी। पगार का मकड़जाल ऐसा बनाया गया कि किसान कर्ज में डूबा रहे और वह जमींदार और अंग्रेजों का जीवन पर्यन्त गुलाम बना रहे।

---

[28] विपिन चन्द्र, **पूर्वोक्त**, पृ. 142
[29] अयोध्या सिंह, **पूर्वोक्त**, पृ. 70

नील किसानों पर अत्याचार का विघटन 1830 में देवेन्द्रनाथ ठाकुर के तत्वबोधनी पत्रिका में अक्षय कुमार ढल ने लिखा।

11 निलहे साहबों के कामों का वर्णन करते हुए प्रजा पीड़न का ही विवरण लिखना पड़ता है वे दो प्रकार से नील प्राप्त करते हैं प्रजा आदि को अग्रिम मूल्य देकर नील खरीदते हैं और अपनी भूमि कराकर नील तैयार करते हैं। ये दोनों ही प्रजा के नाश के अमोघ उपाय हैं। माल को वाजिब कीमत देना उनकी नीति नहीं, इसलिए, वे प्रजा की नील की बहुत ही कम कीमत निश्चित करते हैं। दया कर पेशगी के तौर पर जो रकम देने का वे हुक्म देते हें, गुमारत और दूसरे नौकर शाहों को दस्तूरों और हिसाब आदि में उसका भी कोई न कोई हिस्सा काट लिया जाता है। उसमें नीलेह साहब का नील बोने से लाभ की बात तो दूर, उसे कर्ज के मजबूत जाल में फंस जाना पडता है। उसे अपनी ही जमीन में नील जरूर बोना पड़ता है। इस जमीन का नाम खाताई जमीन है। खाताई जमीन का प्रसंग उठते ही प्रजा का शोक सागर हिलोरे लेने लगता है।

नील की खेती में किसानों की हानि ही हानि होती थी। वे किसी भी कीमत पर नील की खेती से मुक्त होना चाहते थे किन्तु वे नहीं हो पा रहे थे।

जिस कारण समय के साथ नील किसानों का आक्रोश और नील कोठियों के विरूद्ध विद्रोह की भावना पकने लगी थी।

नील किसान इस हत्याचार के खिलाफ लड़ने लगे थे। विद्रोह नबिया, जैसोट, वाशासात, फरीदपुर और बंगाल के अनेक जिलों में फैल गया। अनेक कोठियां जलाई गई और लूटी गईं। इस विद्रोह से अंग्रेज सरकार कांप गयी थी।

नील किसानों के आन्दोलन के सामने अंग्रेजी सरकार को झुकना पड़ा और सरकार को नील की खेती बंद करनी पड़ी थी। इस तरह नील किसानों ने स़ामन्तों और साम्राज्यवादी शक्तियों से मोर्चा लिया और उन्हें मात दी थी। भारतीय किसानों के इतिहास में यह एक अभूतपूर्ण घटना के रूप में स्मरण किया जाएगा।

सभी किसान विद्रोहों अथवा आन्दोलनों के ढांचे में एक सामान्य तत्व यह था कि ये एक तरफ सामन्तीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों से लड़ रहे थे तो दूसरी तरफ अन्याय, अत्याचार और शोषण के विरूद्ध संगठित होकर अपना विरोध प्रकट कर रहे थे।

नील आन्दोलन के बाद पाबना किसान आन्दोलन ने पूरे बंगाल को हिलाकर रख दिया था। पाबना किसान विद्रोह का आरम्भ शहजादपूर के गांव से प्रारम्भ हुआ था और धीरे–धीरे यह पूरे जिले में फैल गया था।

यह आन्दोलन इतना व्यापक हो गया था कि सामंत और अंग्रेज सरकार के अधिकारी इसके नाम से भी कांपने लगे थे। इस विद्रोह का मुख्य कारण जमींदारों द्वारा किसानों का अत्याचार करना व उनकी सम्पति लूटना और महिलाओं का अपमान करना था। इसका बदला लेने के लिए पाबना के किसान संगठित हुए थे।

पाबना किसान आन्दोलन की सबसे बडी सफलता इस बात से आंकी जा सकती है कि सरकार ने फरमान जारी किया कि गैर कानूनी काम करने की किसी को भी इजाजत नहीं है। इसके साथ ही यदि किसान शान्ति पूर्वक अपनी मांगें व शिकायतों को सरकार के सम्मुख रखेंगे तो सरकार उन पर विचार करेंगी।

इस विद्रोह के दबाव में 'बंगाल प्रजा स्वत्व कानून' पारित किया गया, इसमें कहा गया कि जो किसान 12 वर्षों से खेत जोतते बोते रहे हैं उन्हें जमीन से बेदखल नहीं किया जा सकता है।

इस तरह पाबना किसान आन्दोलन केवल जमींदारों के अत्याचारों का ही जवाब नहीं था बल्कि लगान रूपी भोशण के हथियार पर अंकुश लगाने में सफल हुआ। यह सामन्तवादी और साम्राज्यवादी व्यवस्था की बहुत बड़ी पराजय थी।

डॉ0 ए.आर.देसाई किसानों, मालिक किसानों, बटाईदारों और खेत मजदूरों के आन्दोलन के कुछ बिन्दुओं की ओर संकेत करते हैं:

इन विद्रोहों से ब्रिटिश किस तरह घबरा गए थे उसे खुद भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड केनिंग के शब्दों में सुनिए– "नील के किसानो के वर्तमान विद्रोह के बारे में मुझे इतनी चिंता रही जितनी दिल्ली की घटना के समय भी नहीं हुई थी। मैं हर समय सोचता रहता कि अगर किसी अबोध नीलहे ने भय क्रोध से गोली चला दी तो उसी वक्त दक्षिण बंगाल की सब कोठियों में आग लग जाएगी।"

असम के कुलियों का विद्रोह बेईमान साहुकारों और सूदखोरों और उनके रक्षक ब्रिटिश उपनिवेशवादियों के खिलाफ था। आदिम हथियारों के बावजूद पहाड़ी आंचल से फायदा उठाकर कूली दस वर्ष तक अंग्रेजों के खिलाफ लड़ते रहे। असम के नौ गाव जिले के फूलगाड़ी के आदिवासी किसानों का हंगामा अफीम की खेती को सरकारी नियंत्रण में लाने और सरकार को आयकर तथा कर लगाने की योजना के खिलाफ था। सूखा, अकाल और दूसरी तरफ राजस्व में वृद्धि और साहुकारों सूदखोरो के अत्याचारों ने महाराष्ट्र के किसानों को विद्रोही बना दिया था।[30] किसानों की उग्रता देखकर सरकार ने इसके कारणों का पता लगाने के लिए 'दक्षिण दंगा आयोग' बैठाना पड़ा और किसानों पर अत्याचार कम करने के लिए कदम उठाने पड़े।

[30] अयोध्या सिंह, **पूर्वोक्त**, पृ. 338

महाराष्ट्र के किसानों और जन साधारण के इसी असंतोष का परिणाम वासुदेव बलवंत फडके के नेतृत्व में विद्रोह था और इतिहासकारों ने उन्हें महाराष्ट्र का **'राबिन हुड'** कहा है।[31] इसके साथ ही सन 1921 का मोपाला विद्रोह सब से प्रबल किसान विद्रोह माना गया था। भारत के दलित मालाबार इलाके में मुसलमानों की एक विशेष जाति का बहुत था। जिसे मोपाला कहते थे। इस क्षेत्र में असहयोग और खिलाफत आन्दोलन ने जोर पकड़ा था जिसका उद्‌देश्य ब्रिटिश सरकार को खत्म करना था।

असहयोगियों और खिलाफत वालों ने मांग की कि माल गुजारी कम कर दी जाए। आन्दोलन सम्राज्यवादी विरोधी होने के साथ सामंत विरोधी भी हो गया। सेना पुलिस और जमींदार किसान नेताओं को गिरफ्तार करने तिरूगादी पहुंचे। पांच हजार किसानों ने उनका मुकाबला किया और उन्होंने दो अंग्रेजों को मार डाला। अन्य किसान अंग्रेजों के साथ लड़ते हुए शहीद हो गए। इस प्रकार मोपाला किसान विद्रोह शुरू हुआ। सरकार ने मोपाला विद्रोह को दबाने के लिए इस क्षेत्र में मार्शल लॉ लगा दिया। दिसम्बर सन् 1921 तक तीस हजार मोपाले किसान गिरफ्तार कर लिए गए थे।

---

[31] विपिन चन्द्र, **पूर्वोक्त**, पृ. 129

सरकार ने और जमींदारों ने अफवाहें उड़ाकर इसे साम्प्रदायिक रंग में रंग दिया जिस कारण यह आन्दोलन कमजोर हो गया था। जो किसान गिरफ्तार किए गए थे उन्हें फांसी, कालेपानी तक की सजाएं दी गई थी। बहुत से किसान नेता अंत तक कालेपानी में पड़े रहे थे और उन्होंने वहीं पर दम तोड दिया था।

इसके बाद सन 1921–22 में ही अवध प्रांत में किसान विद्रोहों की आंधी चली थी। इस समय विश्व युद्ध के कारण किसानों की भारी लूट और इसके बाद भी किसानों की जमीनें छीनने और लगान बढ़ाने का क्रम जारी था।

जमींदार, तालूकदार, सूदखोर, पुलिस, पटवारी और कानुनगो सब अंधाधुध लूट मे लगे थे। इन दिनों अवध प्रांत में जमींदार और तालूकदार 120 तरह के अबबाव वसूल करते थे। सामाजिक अत्याचार भी चरम सीमा पर था हर दिन शर्मनाक और अत्याचार की घटनाएं घटती रहती थीं।

इसके विरूद्ध जौनपुर, प्रतापगढ, रायबरेली, फैजाबाद, सुलतानपुर आदि जिलों में बाबा रामचन्द्र के नेतृत्व में एक विराट आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था। जमींदार और तालूकदारों से मिलकर पुलिस ने विद्रोही किसान नेताओं को झूठे मुकदमों में फंसाना और आतंकित करना शुरू कर दिया था। बाराबांकी जिले में भी विद्रोह की हरकतें पैदा हो गईं। जिसमें मोती लाल जैसे सम्मानित नेताओं ने इन जिलों में पहुंचकर जमींदारों और पुलिस की सहायता से अमन सभाएं कायम करने का प्रयास

किया।[32] इसी दौर में आध्र प्रदेश में श्री सीताराम राजू के नेतृत्व में आदिवासियों का सशस्त्र संघर्ष हुए थे। श्री सीताराम राजू तो सन 1921 के असहयोग आन्दोलन में सजा भी काट आए थे। गुजरात में सूरत जिले का किसान आन्दोलन जो बारदोली सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है जो लगान न देने के विरोध में शुरू हुआ था। देश में जनमत लगातार सरकार विरोधी होता जा रहा था। बंबई प्रेसीडेंसी के कई हिस्सों में किसान अपने लगान के पुनर्निर्धारण के लिए आंदोलन की धमकी दे रहे थे। बंबई के कपड़ा मिलों के मजदूर हड़ताल पर थे और सरकार को डर था कि कहीं सरदार पटेल और बंबई के कम्यूनिस्ट नेता मिलकर रेल हड़ताल न करा दें। इससे सेना और रसद का बारदोली पहुंचना असंभव हो जाएगा।[33] पंजाब से बारदोली के लिए जत्थों की पैदल रवानगी की बातें उठ रही थीं। 2 अगस्त 1928 को गांधी जी बारदोली पहुंच गए। इस आश्य से कि यदि सरदार पटेल को गिरफ्तार कर लिया तो वह आंदोलन की बागडोर संभालेंगे। इन परिस्थितियों में अब सरकार क्या कर सकती थी। वह मुंह छिपाने का बहाना ढूंढने को मजबूर थी।

इन आन्दोलनों के प्रभाव से सरकार ने 30 प्रतिशत लगान बढौतरी को खुद ही गलत बताना शुरू कर दिया और इसे घटाकर 6 प्रतिशत कर दिया था। इस

[32] वी के अग्निहोत्री, **पूर्वोक्त**, पृ 254
[33] विपिन चन्द्र, **पूर्वोक्त**, पृ. 156

पर लंदन में प्रकाशित **'न्यू स्टेटमैन'** ने 5 मई 1926 के अपने अंक में लिखाः जांच समिति की रिपोर्ट सरकार के मुंह पर तमाचा है ....इसके दूरगामी परिणाम होंगे।

असहयोग आन्दोलन के बड़े नेता सूर्य सेन चटगांव के आन्दोलन के मुख्य नेता के रूप में जाने जाते थे। क्रांतिकारी गतिविधियों में शरीक होने के आरोप में दो साल की सजा 1926 से 1928 तक हुई थी। जेल से छूटने के बाद वह कांग्रेस कमेटी में काम करते रहे। 1929 में सूर्य सेन चटगांव जिला कांग्रेस कमेटी के सचिव थे और उनके पांच अन्य सहयोगी इसके सदस्य थे। सूर्य सेन ने जल्द ही ढेर सारे युवा क्रांतिकारियों को अपना समर्थक बना लिया। इन क्रांतिकारी युवकों ने जनता को यह जताने के लिए कि सशस्त्र विद्रोह से अंग्रेजी साम्राज्यवाद को उखाड़ फैंका जा सकता है।

18 अप्रैल 1930 को छः क्रांतिकारीयों ने पुलिस शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया। ये लोग नारा लगा रहे थे– 'इंकलाब जिन्दाबाद, 'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद और 'गांधी जी का राज कायम हो गया।' उसके बाद सभी क्रांतिकारी पुलिस शस्त्रागार के बाहर इकट्ठे हुए। तब 'वंदे मातरम' और 'इंकलाब जिन्दाबाद' के नारों के बीच सूर्य सेन ने तिरंगा फहराया और काम चलाऊ क्रांतिकारी सरकार के गठन की घोषणा की।

लेकिन 16 फरवरी 1933 को सूर्य सेन गिरफ्तार कर लिया गया। उन पर मुकदमा चला और 12 जनवरी 1934 को उन्हें फांसी पर लटका दिया गया। उनके तमाम सहयोगी क्रांतिकारी भी पकड़े गए और उन्हें भी लम्बी सजाएं दी गई।

लेकिन इस घटना से बंगाल के युवकों का उत्साह बहुत बढ़ा और भारी संख्या में युवक क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे थे। 1930 में क्रांतिकारी गतिविधियों ने फिर जोर पकड़ा और यह क्रम 1932 तक चलता रहा। बलिदानी युवकों की संख्या बढ़ती गई।

बंगाल के आन्दोलन की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इसमें युवतियों ने भी बराबर की भागीदारी की थी। सूर्यसेन के नेतृत्व में ये क्रांतिकारी महिलाएं संदेश पहुंचाने और हथियारों की रक्षा करने का काम करती थीं। मौका पड़ने पर हाथ में बंदूक लेकर संघर्ष भी करती थी।[34]

इस प्रकार से यह आन्दोलन चलते रहे, भगत सिंह 23 मार्च 1931 में फांसी के बाद आजादी के आन्दोलन ने एक नया रूप धारण कर लिया था। अब पूरे देश में अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध आक्रोश था। जिन आर्थिक व समाजिक स्थिति का अध्ययन किया गया है क्योंकि अंग्रेजी सरकार आर्थिक व समाजिक रूप से भारतीय जनता का शोषण कर रही थी और या लगातार बढ़ रहा था। इन सारे आन्दोलनों

[34] विपिन चन्द्र, **पूर्वोक्त**, पृ. 157

के मध्य यह एक मुख्य कारण था। भगत सिंह के समय तक यह स्थिति बहुत ही विकराल रूप ले चुकी थी। इस लिए विरोध भी बहुत तेज व हिंसक रूप ले रहे थे।

इस अध्याय का उदेश्य भगत सिंह के समय में भारत को आर्थिक व समाजिक स्थिति का विशलेषण निष्पक्षता से करना है और उसने किस तरह भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन को प्रभावित किया इसको जानने का प्रयास किया गया है।

अध्याय – 4

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भगत सिंह का योगदान : एक विशलेषण

19वीं सदी के तीसरे दशक की बदलती हुई परिस्थितियों में नौजवान क्रांतिकारी नई विचार धारा की तरफ बढ़ रहे थे और भारतीय जनता के साथ सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे। सामाजिक शक्तियों एंव सामाजिक अथल–पुथल में पीड़ित जनता की स्थिति को देखकर उनकी समझ और भी विकसित हुई। जिसके परिणामस्वरूप विदेशी शासन यानि ब्रिटिश दासता के खिलाफ जनता में विद्रोह की भावना अत्यधिक मजबूत हो गई थी।[1] इसी समय में साम्राज्यवाद एंव उपनिवेशवाद विरोधी भारतीय नौजवानों की एक ऐसी पीढ़ी उभर कर सामने आयी जो पूर्ण स्वाधीनता की मांग कर रही थी। एक ऐसी मांग जिसे उस समय तक राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं ने स्वीकार नहीं किया था। वे नोजवान जातिगत और साम्प्रदायिक भेदभाव के विरोधी थे और धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण अपना रहे थे। इस समय जगह–जगह देश भर में नौजवान सभाएं कायम हुई, जो पूर्ण

---

1 मन्मनाथ गुप्त, **भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास**, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1960,पृ. 9

स्वाधीनता, राष्ट्रीय एकता एंव अखण्डता और धर्म निरपेक्षता की भावना से ओत – प्रोत थे। जो पुराने विचारों से चिपकने वालों की सख्त आलोचना कर रहे थे।[2]

भगत सिंह राष्ट्रीय क्रांतिकारियों की उस नई आधुनिक पीढ़ी के सदस्य थे। जिसका दृष्टिकोण अपने पूर्ववर्तियों से भिन्न था। बीसवीं सदी के आरम्भ से लेकर दूसरे दशक तक के क्रांतिकारियों के पास राष्ट्रीय संघर्ष को वास्तविक अंतर्वस्तू एंव एक नए स्वाधीन भारत के निर्माण के बारे में कोई स्पष्ट विचारधारा नहीं थी। वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा प्राप्त करने की करज से वे अतीत में ही झांकते रहे। उनकी विचारधारा व दृष्टिकोण में जनता की समस्याओं व स्थिति का कोई महत्व नहीं था। यह स्वाभाविक था, क्योंकि उस समय तक राष्ट्रीय आन्दोलन परिपक्व नहीं था और अपने लक्ष्यों की आयूबिक जनवादी शब्दावली में परिभाषित करने में असफल था। भगत सिंह अपनी विचारधारा के आधार पर आन्दोलन को आम जनता का आन्दोलन बनाने में सार्थक प्रयास किया।[3]

भगत सिंह ने राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय प्रवेश 1921 में महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन में किया था। लेकिन असहयोग आन्दोलन की विफलता और देशव्यापी निराशा से भरे वातावरण ने देश के क्रांतिकारी नोजवानों को पुन सशस्त्र मार्ग अपनाने और समझौताहीन संघर्ष की और धकेल दिया । भगत

---

[2] शिव वर्मा, **शहीद भगत सिंह की चुनी हुई कृतियां**, समाजवादी साहित्य सदन, कानपुर, 1987, पृ. 4

[3] **पूर्वोक्त**, पृ. 7

सिंह से पहले क्रांतिकारी आन्दोलन अपनी दिशा व लक्ष्य भी तय नहीं कर पाया था। उन्होंने स्पष्ट किया था कि क्रांति का मतलब मात्र उथल–पूथल या खूनी संघर्ष नहीं बल्कि जब क्रांति की बात करते है तो उसमें मोजूदा हालातों को पूरी तरह ध्वंस करने के बाद समाज के व्यवस्थित पुनर्गठन की बात निहित है, जिसके लिए भगत सिंह, सूखदेव, यशपाल, भगवती, एहसानइलाही और धंवनतरि आदि क्रांतिकारियों ने लाहौर (पंजाब) में अक्तूबर 1926 में नौजवान भारत सभा की स्थापना की जो क्रांतिकारी आन्दोलन का एक खूला मंच था। जिसका काम आम – सभाओं, ब्यानों, पर्चों आदि के माध्यम से क्रांतिकारियों के उदेश्य और उनके विचारों का प्रचार करना था। नौजवान भारत सभा को क्रांति का अगूआ एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लैस संगठन बनाने में भगत सिंह की अहम भूमिका थी।[4]

क्रांतिकारियों के अनुसार अंग्रेजों की दासता के विरूद्व संघर्ष तो उनका पहला मोर्चा था। अंतिम लड़ाई तो उन्हें शोषण के विरूद्व ही लड़नी थी। चाहे वह शोषण मनुष्य के द्वारा मनुष्य का हो या एक राष्ट्र के द्वारा दूसरे राष्ट्र का हो। यह लड़ाई जनता के सहयोग के बिना नहीं लड़ी जा सकती । इसलिए उन्होंने हर संभव उपायों से जनता के अधिक से अधिक निकट पहुँचने का प्रयास किया। नौजवान भारत सभा की स्थापना, मजदूर सभा में काम, पत्र – पत्रिकाओं में लेख –

---

4 रवि राजन और एम.के. सिंह, **भगतसिंह**, के.के. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2009, पृ. 2

मालाएँ, मैजिन लैन्दर्न का प्रयोग, पर्चे और पैम्पलेट आदि इसी प्रयास के अंग थे। भगवती चरण वोहरा और भगत सिंह ने सभा का कार्यक्रम तैयार करते समय देश के तत्कालीन परिवेश एंव राजनीति के विविध पहलूओं पर विस्तार के साथ प्रकाश डाला था। उस दौर को अराजकता, निराशा, अविश्वसनीयता तथा उदेश्यहीनता के बारे में अपने भविष्य के कार्यक्रम का ऐलान किया था कि किसी राष्ट्र के निर्माण की प्रकिृया में अराजकता एक अनिवार्य तथा आवश्यक दौर है। उनके अनुसार ऐसी ही नाजूक घड़ियों में कार्यकताओं की ईमानदारी की परख होती है, उनके चरित्र का निर्माण होता है, वास्तविक कार्यक्रम बनता है और तब नए उत्साह, नई आशाएं, नए विश्वास और नए जोशों – खरोश के साथ काम आरम्भ होता है इसलिए उनमें मन छोटा करने की बात नहीं है।[5]

शहीद भगत सिंह और भगवती चरण वोहरा नोजवानों और विद्यार्थिओं को संगठित करने के प्रयास सन् 1926 से ही शुरू कर दिए थे। 11, 12, 13 अप्रैल, 1928 को अमृतसर में नौजवान भारत सभा के सम्मेलन के लिए सभा का धोषणा पत्र तैयार किया गया। भगत सिंह इस सभा के महासचिव और भगवती चरण वोहरा प्रचार सचिव बने थे। नोजवान भारत सभा के उदेश्य थे : –

---

5 रघुबीर सिंह, **भगत सिंह और स्वतन्त्रता संग्राम**, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1990, पृ. 85

1. समस्त भारत के मजदूरों और किसानों का एक पूर्ण स्वतन्त्र गणराज्य स्थापित करना।
2. एक अखण्ड भारत के निर्माण के लिए देश के नौजवानों में देश भक्ति की भावना उत्पन्न करना।
3. उन आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक आन्दोलनों के साथ हमदर्दी रखना, सहायता करना जो साम्प्रदायिक विरोधी हो और किसान मजदूरों के आदर्श गणतांत्रिक राज्य को प्राप्ति में सहायक हों।
4. किसानों व मजदूरों को संगठित करना।[6]

भगत सिंह के साथी यशपाल के अनुसार भगत सिंह, सुखदेव विजयकुमार सिन्हा और शिव वर्मा के प्रयत्नों से उत्तर भारत के प्रान्तों के क्रांतिकारी प्रतिनिधियों की एक बैठक 8–9 सितम्बर, 1928 को फिरोजशाह किले के खण्डहरों में हुई थी। अब इस किले के खण्डहर बहादुरशाह जफर मार्ग की आलीशान इमारतों के पीछे अदृश्य हो गये हैं। इस बैठक में पंजाब से सुखदेव और भगत सिंह, राजपुताना से कुंदनलाल, युक्त प्रांत से शिववर्मा, ब्रहमदत्त मिश्र, जयदेव कपूर, विजय कुमार सिन्हा, सुरेन्द्र पाण्डे, बिहार से फणीन्द्रनाथ घोष और मनमोहन बैनर्जी आये थे। चन्द्र शेखर आजाद इस बैठक में नहीं आ पाये थे। भगत सिंह और शिव वर्मा उनसे

[6] दीपचन्द्र निर्मोही, **भगत सिंह से दोस्ती : सूरज का सफर**, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 2007, पृ. 34

पहले ही मिल चुके थे। आजाद ने आश्वासन दिया था कि बहुमत से जो कुछ निर्णय होगा, उसे वे स्वीकार कर लेंगें।

सरदार भगत सिंह अपने स्वभाव से बहुत संवेदनशील और संजीदा क्रांतिकारी थे। नौजवान भारत सभा के गठन के बाद भगत सिंह ने क्रांतिकारी आन्दोलन को एकता के सूत्र में पिरोने का काम अपने कंधों पर लिया।[7] दल की इसी बैठक में भगत सिंह ने प्रस्ताव रखा था कि दल का नाम हिन्दुस्तान रिपब्लिक ऐसोसिएशन के स्थान पर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन ऐसोसिएशन किया जाए। भगत सिंह के इस प्रस्ताव को बैठक में शामिल दल के लक्ष्य और विचारधारा के सम्बन्ध में किसी गलतफहमी की कोई गुंजाईश नहीं बची थी। अब क्रांतिकारी दल का कार्यभार हिन्दुस्तान से अंग्रेजों को भगाकर देश में महज प्रजातंत्र संघ की स्थापना का ही नहीं रह गया था बल्कि इससे भी आगे बढ़कर समाजवादी प्रजातंत्र संघ की स्थापना का हो गया था। फिरोजशाह कोटला की इसी बैठक में हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र ऐसोसिएशन दल की एक सेना का गठन भी हुआ जिसका नाम हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना रखा गया।

[7] श्याम सुन्दर, **शहीद भगत सिंहः लक्ष्य और विचारधारा**, एकता प्रकाशन, हिसार, 2012, पृ. 24–25

चन्द्रशेखर आजाद इसके कमाण्डर–इन–चीफ निर्वाचित हुए। भगत सिंह व विजय कुमार सिन्हा को राष्ट्रीय स्तर पर काम के संयोजन की जिम्मेदारी मिली थी।[8]

भगत सिंह का इस संगठन का नाम बदलने के पीछे कई उददेश्य निहित थे जिसके कारण उन्होंने यह बैठक की थी। उन्होंने समाजवाद को साहस के साथ अपना अन्तिम लक्ष्य घोषित किया।

उन्होने पार्टी का नाम बदलने की बात की ताकि लोग जान सकें कि उनका अन्तिम लक्ष्य क्या है? उन्होंने सिर्फ उन्हीं कामों को हाथ में लेने को कहा जिनका सीधा सम्बन्ध जनता की जरूरतों और भावनाओं से हो। उन्होंने अपने मित्रों से कहा था कि उन्हें मामूली पुलिस अधिकारियों या भेदियों को मारने में समय का उपव्यय नहीं करना चाहिए। धन के लिए उन्हें सरकरी खजाने पर ही हाथ डालना चाहिए और यथा संभव निजी घरों पर कार्यवाही नहीं करनी चाहिए। सामूहिक नेतृत्व के सिद्धान्त का कड़ाई से पालन करना चाहिए।

इन सब उद्देश्यों को सामने रखकर यह मीटिंग हुई थी। जिन पर सहमति बन गई थी। इससे उन्होंने अपनी दिशा व लक्ष्य को निर्धारित किया था।[9] उन्होंने दल के नाम के साथ समाजवादी शब्द जोड़ने की आवश्यकता इसलिए बताई थी ताकि

---

[8] अजय कुमार घोष, **भगत सिंह एण्ड हिज कामरेडस**, प्यूपलस पब्लिशिंग, नई दिल्ली, पृ. 37
[9] शिव वर्मा, **संस्मृतियां,** लोक प्रकाशन गृह, दिल्ली, 2007, पृ. 50

सभी को स्पष्ट हो जाये कि भारत की स्वतंत्रता के बाद देश के शासन का स्वरूप क्या होगा? उन्होंने प्रगतिशील कदम उठाने का प्रयास किया ताकि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में समाजवादी समाज की स्थापना हो जाए। उन्होंने कृषक और मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए प्रयत्न करने की बात कही थी।[10] इसी दौरान 1928 में भारत के भाग्य का निपटारा करने के लिए इंग्लैण्ड से एक कमीशन भारत आया था जिसके अध्यक्ष इंग्लैण्ड के एक प्रसिद्ध वकील सर जान साइमन थे। इस कमीशन में भारत का कोई प्रतिनिधि नहीं लिया गया था। कांग्रेस और दूसरे संगठनों ने इस कमीशन का बायकॉट करने का निश्चय किया। 3 फरवरी 1928 को यह कमीशन बम्बई पहुंच गया। इस दिन सारे देश में हड़ताल की गई और बम्बई में साइमन कमीशन गो बैक के नारों के साथ एक ऐसा गर्म प्रदर्शन हुआ कि अंग्रेजी सरकार हैरान रह गई। इस कमीशन को बम्बई के बाद दिल्ली, मद्रास और कलकत्ता में काले झण्डे दिखाए गए। मद्रास में पुलिस ने गोली चलाई, जिससे 3 लोग मारे गए। जहां–जहां यह कमीशन गया, इसका साइमन कमीशन गो बैक के नारों से स्वागत किया गया।[11] 30 अक्टूबर 1928 को साइमन कमीशन लाहौर पहुंचा। कमीशन का विरोध करने की पूरी तैयारी कर ली गई थी। नौजवान भारत सभा के नेतृत्व में यह

---

10 विकास नारायण राय, **भगत सिंह से दोस्ती : क्रांति और जीवन**, साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ.40

11 मदन लाल कपूर, **आजादी के मतवाले: अमर शहीद भगत सिंह, उनके पूर्वज एवं साथी**, भारत भूषण कपूर, करनाल, 2010 पृ. 73

काम हो रहा था। भगत सिंह द्वारा लाला लाजपतराय को प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व करने के लिए तैयार कर लिया गया था। विरोध के लिए भारी भीड़ जमा थी। कोर्ट ने सांडर्स को लाठीचार्ज करने को कहा। सांडर्स ने व सभी पुलिस कर्मियों ने लाठियां चलाई। भीड़ तितर–बितर हो गई। लाला लाजपतराय व नौजवान भारत सभा के सदस्य नहीं हटे। उन पर भी लाठियां बरसीं। जिससे उनको गहरी चोटें लगीं। उसी शाम लाला लाजपतराय ने सभी को संबोधित किया और ऊंची आवाज में उन्होंने कहा, कि मेरे शरीर पर पड़ी हुई चोटें अंग्रेजी राज्य के ताबूत की आखिरी कील सिद्ध होगी।

17 नवम्बर, 1928 को लाला लाजपतराय की मृत्यु हो गई। भगत सिंह ने हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक ऐसोसिएशन की बैठक बुलाई और उन्होंने लाला जी की मृत्यु का बदला लेने को कहा। घटना को कार्यरूप देने के लिए 17 दिसम्बर का दिन तय हुआ था। 17 दिसम्बर, 1928 को उप पुलिस अधीक्षक सांडर्स को भगत सिंह राजगुरू ने गोलियों से मार दिया था। 18 दिसम्बर, 1928 को पोस्टरों पर लिखा गया था कि सांडर्स मारा गया है जिसने लाहौर में लाला लाजपतराय को मारा था।[12]

---

[12] शील भद्र कुमार, **भगत सिंह–ए–रिमैम्बरेन्स**, मेनरूद्रोम, वॉल्यूम–49, न. 16,19, अप्रैल, 2011

क्रांतिकारियों के अनुसार यह सोचकर उनको दुख हुआ था कि जे.पी. सांडर्स जैसे एक मामूली अफसर के कमीने हाथों देश की तीस करोड़ जनता द्वारा सम्मानित एक नेता पर हमला करके उनके प्राण ले लिए गए। राष्ट्र का यह अपमान भारत के युवकों और सभी भारतवासियों के लिए एक चुनौती थी। क्रांतिकारियों के अनुसार विदेशी सरकार चाहे कितना भी दमन कर ले परन्तु उन्होंने राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा के लिए और विदेशी अत्याचारियों को सबक सिखाने के लिए सदा तत्पर रहने को कहा था। उनके अनुसार वे सब विरोध और दमन के बावजूद क्रांति की पुकार को बुलंद रखेंगे और फांसी के तख्तों से भी पुकारते रहेंगे– इंकलाब जिन्दाबाद।[13] हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक सेना के नोटिस के अनुसार क्रांतिकारियों ने उनकी हत्या करने का खेद जताया था। उनके अनुसार वह आदमी उस निर्दयी, नीच और अन्यायपूर्ण व्यवस्था का अंग था जिस व्यवस्था को उन्होंने समाप्त कर देना आवश्यक समझा था। उस आदमी की हत्या हिन्दुस्तान में ब्रिटिश शासन के कारिन्दे के रूप में की गई थी। उनके अनुसार वह संसार की सबसे अत्याचारी सरकार थी।

भगत सिंह ने मनुष्य का रक्त बहाने के लिए खेद जताया था, परन्तु उन्होंने क्रांति की वेदी पर कभी–कभी रक्त बहाना अनिवार्य बताया था। उनका उददेश्य

---

13 दीपचन्द्र निर्मोही, **पूर्वोक्त,** पृ. 42

एक ऐसी क्रांति से था जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अन्त कर देगी।[14] भगत सिंह का छोटी से छोटी घटना की तह में जाना और उसके संभावित परिणामों के बारे में चिन्तन–मनन करना उनका महान गुण था। यह वही गुण था, जिसने भगत सिंह को जीवन की सर्वोच्च ऊंचाईयों तक पहुंचाया। जनता से सीधे–सीधे संपर्क स्थापित करना वे अपना उद्देश्य घोषित कर चुके थे।

पब्लिक सेफ्टी बिल और ट्रेड डिस्पयूट बिल को अंग्रेज सरकार देश के अन्दर तेजी से विकसित हो रहे मजदूर आन्दोलन और पूर्ण स्वाधीनता की पक्षधर कम्यूनिस्ट पार्टी की कुचलने के लिए केन्द्रीय असैम्बली में पारित करना चाहती थी।

पहले बिल में गर्वनर–जनरल को यह अधिकार दिया गया था कि अंग्रेज या अन्य विदेशी कम्यूनिस्ट को भारत से निकाल दें। दूसरे बिल का उद्देश्य मजदूरों के ट्रेड यूनियन अधिकारियों में कटौती करना था। दोनों बिलों का केन्द्रीय असैम्बली में सम्पूर्ण विपक्ष और भारतीय प्रैस ने विरोध किया था। अब भगत सिंह के पास वह जनता के नजदीक आने का दूसरा अवसर था। फ्रांस के अराजकतावादी विचारक वेला द्वारा वहां की संसद में धमाका किया गया था और उन्होंने कहा था कि बहरों को सुनाने के लिए ऊंची आवाज की जरूरत होती है के वाक्य भगत सिंह के कानों में गूंज रहे थे।[15] जिनको ध्यान में रखते हुए भगत सिंह व सुखदेव ने दिल्ली में

---

14 जगमोहन सिंह और चमनलाल, **पूर्वोक्त**, पृ. 252

15 रघुबीर सिंह, **पूर्वोक्त**, पृ. 115–116

8 अप्रैल, 1929 को असैम्बली भवन में घुसकर सरकारी अफसरों की ओर दो बम फैंके। भीषण धमाके के साथ दोनों बम फट गये और सारा कमरा धुएं से भर गया। वे बैंच जिनके समीप ये गिरे थे, चूर–चूर हो गये और सतह के एक हिस्से में भी एक गडढा सा हो गया था, किन्तु किसी को चोट नहीं आयी थी। उस समय असैम्बली का दृश्य भी देखने योग्य था। उनके वीर सदस्यगण समीप वाले कमरे की ओर इस प्रकार भागे, मानों किसी भीषण जन्तु ने उनका पीछा किया हो। कुछ लोग तो जान बचाने के लिए बाथरूम में घुस गये थे। दर्शकों की गैलरी भी खाली पडी थी। कुछ लोग अपनी जगहों पर निश्चल भाव से डटे रहे। इन लोगों में पं. मोतीलाल नेहरू, पं. मदनमोहन मालवीय ओर सर जेम केरर भी थे। भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त भी शांत खड़े थे।

जिस अवसर पर असैम्बली में बम फैंका गया था, यह अवसर भी बडा महत्वपूर्ण थां इस समय बंबई में मजदूरों का आन्दोलन जोरों पर था। उसकी सफलता से सरकार भयभीत हो उठी थी। भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त हाल में बम गिराने के बाद इंकलाब जिंदाबाद, हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ जिन्दाबाद साम्राज्यवाद का नाश हो नारे ऊंची आवाज में बोल रहे थे।[16] उन्होंने असैम्बली में पर्चे फैंके जिनके अनुसार सरकार भारतीय जनता पर दमनकारी कानून लादती जा

---

16 जितेन्द्र सान्याल, **अमर शहीद सरदार भगत सिंह**, वस्तुकुंज, नई दिल्ली, 2012, पृ. 45

रही थी। पब्लिक सेफ्टी बिल, ट्रेड डिस्पयूट बिल व लाला लाजपतराय की मृत्यु के विरूद्ध विद्रोह किया गया था। वे इतिहास द्वारा उनको बताना चाहते थे कि व्यक्तियों की हत्या करना आसान है, लेकिन तुम विचारों की हत्या नहीं कर सकते। बड़े–बड़े साम्राज्य नष्ट हो गए, जबकि विचार जीवित रहे। फ्रांस के बूर्बा और रूस के जार समाप्त हो गए, जबकि क्रांतिकारी विजयी सफलता के साथ आगे बढ़ते गए। वे मनुष्य के जीवन को पवित्र समझते थे। वे ऐसे उज्जवल भविष्य में विश्वास रखते थे जिसमें प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण शांति और सुरक्षा का उपयोग करेगा। वे मानव रक्त बहाने के लिए अपनी विवशता पर दुःखी थे, परन्तु वे क्रांति द्वारा सबको समान स्वतंत्रता देने और मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण को समाप्त कर देने के लिए क्रांति में कुछ व्यक्तियों का बलिदान अनिवार्य समझते थे।[17]

अधिकारियों को आशंका थी कि ये बम विस्फोट भावी घटनाओं के संकेत हैं। ये खौफ में थे कि असैम्बली की इस घटना को दबा देने को कहा गया था। ज्यादातर अखबारों में संक्षिप्त खबर छपी, हालांकि द हिन्दुस्तान टाइम्स नई दिल्ली ने तीन पंक्तियों की सुर्खी के साथ पूरी खबर दीः

> असैम्बली में बम और पिस्तौल ने भगदड़ मचाई;
> दो बम फटे, पिस्तौल से गोलियां दागी गई।
> महिला दीर्घा में स्त्रियों की चीख पुकार;

[17] विजय कुमार सिन्हा, **दि मायर्ड टू डैथ,** मेनस्ट्रीम, वॉल्यूम, 45 न. 16, 23 मार्च 2012

सर फोमनाजी दलाल गंभीर रूप से घायल,
दो गिरफ्तार, सर जार्ज शूरूटर, मि. एस.सी. गुप्ता
और दूसरे अधिकारियों को मामूली चोटें।[18]

भगत सिंह और बटुकेशवर दत्त को सिविल लाईन पुलिस स्टेशन में 22 अप्रैल, 1929 तक पुलिस हिरासत में रखा गया। दबाव के बावजूद वहां उन्होंने अपना कोई ब्यान नहीं दिया था और कहा था कि वे जो कुछ भी कहेंगे अदालत के सामने कहेंगे। उनको दिल्ली जेल में भेज दिया गया। अप्रैल 1929 के तीसरे सप्ताह में सरदार किशन सिंह (भगत सिंह के पिता) भगत सिंह को देखने दिल्ली आये। पुलिस ने उन्हें देखने नहीं दिया तो वे उदास होकर चले गए। भगत सिंह ने दिल्ली जेल से 26 अप्रैल को अपने पिता को पत्र लिखा जिसके अनुसार मुकदमा 7 मई जेल के अन्दर ही शुरू होना था। उन्होंने सारा ड्रामा एक महीने में समाप्त होने की बात कही थी और ज्यादा फिक्र करने व कोई वकील करने की जरूरत नहीं बताई थी। पत्र के अनुसार उन्होंने अपने पिता से कुछ पुस्तकें गीता रहस्य, नेपोलियन की मोटी सुआने उमरी (जीवन, चरित्र) और अंग्रेजी के कुछ उपन्यास मंगवाये थे। भगत सिंह इस मुकदमें को सही ढंग से लड़ने के पक्ष में नहीं थे। यद्यपि उनके पिता जी हर स्थिति में अपने बेटे को कारागार से मुक्ति दिलाने के लिए जी–तोड़ परिश्रम

[18] कुलदीप नैयर, **शहीद भगत सिंहः क्रांति के प्रयोग**, संवाद प्रकाशन, मेरठ, 2004, पृ. 88

कर रहे थे।[19] उन पर दिल्ली की सेशन अदालत में उस बम केस का मुकदमा चल था। 6 जून, 1929 को दिल्ली की सेशन अदालत में भगत सिंह ने अपना एक ब्या दिया और ब्यान के दौरान जब सैशन जज ने उनसे पूछा कि क्रांति से उनक अभिप्राय क्या है, तो भगत सिंह ने इस प्रश्न के उत्तर में अदालत को सम्बोधि किया था। उन्होंने क्रांति के लिए खूनी लड़ाईयों को अनिवार्य नहीं बताया था औ इसी के साथ उन्होंने क्रांति में बम व पिस्तौल की आवश्यकता भी नहीं बताई थी क्रांति से उनका अभिप्राय अन्याय पर आधारित मौजूदा समाज व्यवस्था में आमू परिवर्तन करना था।[20]

इसके अतिरिक्त उन्होंने कहा था कि समाज का प्रमुख अंग होते हुए भी आ मजदूरों को उनके प्राथमिक अधिकारों से वंचित रखा जा रहा है। उनके अनुस दूसरों के अन्नदाता किसान आज अपने परिवार सहित दाने–दाने के लिए मोहता हैं। दुनिया भर के मजदूरों को कपड़ा मुहैया करवाने वाला बुनकर अपने तथा अप बच्चों के तन ढकने भी का कपड़ा नहीं पा रहा है। सुन्दर महलों का निर्माण कर वाले राजगीर, लौहार तथा बढ़ई स्वयं गन्दे बाडों में रहकर ही अपनी जीवन लील समाप्त कर जाते हैं। इसके विपरीत समाप्त के जोंक शोषित पूंजीपति जरा–जरा

---

19 मलविन्द्र जीत सिंह, दरैंच, **भगत सिंहः द एटेरनल रिवैल**, पब्लिकेशन डिवीजन, नई दिल्ली, 2007, पृ. 112

20 जगमोहन सिंह व चमनलाल, पूर्वोक्त, पृ. 278

बातों के लिए लाखों का वारा–न्यारा कर देते हैं।[21] उन्होंने देश में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता बताई थी और जो लोग इस बात को महसूस करते थे, अनेकों साम्यवादी सिद्धान्तों पर समाज का पुनर्निर्माण करने को कहा था।

उनके अनुसार मनुष्य द्वारा मनुष्य का तथा एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण, जो साम्राज्यशाही के नाम से विख्यात है, जब तक इसको समाप्त नहीं कर दिया जाता तब तक मानवता को उसके क्लेशों से छुटकारा मिलना उन्होंने असम्भव बताया था। उन्होंने युद्धों को समाप्त कर विश्व भाांति का प्रार्दुभाव करने की सारी बातें महज ढोंग बतायी थी।

क्रांति से उनका मतलब एक ऐसी समाज व्यवस्था की स्थापना से था जो इस प्रकार के संकटों से मुक्त होगी और जिसमें सर्वहारा वर्ग का आधिपत्य सर्वमान्य होगा और जिसके फलस्वरूप स्थापित होने वाला विश्व संघ पीड़ित मानवता को पूंजीवाद के बन्धनों से और साम्राज्यवादी युद्ध की तबाही से छुटकारा दिलाने में समर्थ हो सकेगा।

उन्होंने क्रांति को मानवजाति का जन्मजात अधिकार बताया था, जिसका अपहरण नहीं किया जा सकता। उन्होंने स्वतंत्रता को मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार और श्रमिक वर्ग को ही समाज का वास्तविक पोशाक कहा था, उन्होंने जनता की

---

[21] भयाम सुन्दर, **पूर्वोक्त,** पृ. 28–29

सर्वोपरि सत्ता की स्थापना करना श्रमिक वर्ग का अन्तिम लक्ष्य और ऐसे महान आदर्श के लिए बड़े से बडा त्याग भी कम बताया था।[22] लार्ड इर्विन ने असैम्बली बम घटना के बारे में कहा था कि यह विद्रोह किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ नहीं, वरन सम्पूर्ण शासन व्यवस्था के विरूद्ध था और तभी भगत सिंह ने तुरन्त भाप लिया था कि लोगों ने उनके इस काम के उद्देश्य को सही तौर पर समझ लिया था।[23] सरदार भगत सिंह ने असैम्बली बम कांड के कैदियों को आजीवन कारावास का दण्ड दिये जाने के बाद ही राजनैतिक कैदियों की दशा में सुधार करने के लिए भूख–हड़ताल की घोषणा कर दी थी। इससे जनता पर उनका प्रभाव और भी बढ़ गया था। भगत सिंह ने इन खबरों को समाचार–पत्रों तक पहुंचाने में सफलता प्राप्त कर ली थी। उनकी मांग के पक्ष में आन्दोलन चालू रखकर उनकी मदद करने के लिए समाचार पत्रों ने बीड़ा उठाया। इससे पहले भी राजनैतिक कैदियों ने भूख हड़ताल की थी।

परन्तु काकोरी कांसपिरेसी केस के कैदियों द्वारा की गई भूख हड़ताल को छोड़कर, बाकी सब कुछ विशेष मांगों के लिए ही की गई थी। भगत सिंह की भूख हड़ताल ने ही पहली बार सारे राजनैतिक वर्ग की साधारण दशा के सुधार की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया था।

---

22 भगवान दत्त, **शहीद भगत सिंह के महत्वपूर्ण दस्तावेज**, एकता प्रकाशन, हिसार, 2012, पृ. 82

23 **पूर्वोक्त**, पृ. 77

सेशन जज द्वारा इस दंडाज्ञा को बहाल रखने से पहले ही भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने राजनैतिक कैदियों के कठोर जेल–जीवन में सुधार के लिए भूख हड़ताल करने का निश्चय किया। उन्होंने बड़ी सफाई से अपने इस निश्चय की सूचना समाचार पत्रों तक पहुंचा दी, जिसने तत्परतासे उनकी मांगों का समर्थन किया।[24] खाना छोड़े उन्हें एक महीने से ऊपर हो गया था फिर भी वे अदालत आएं जिस समय स्ट्रेचर पर डालकर उन्हें अदालत लाया गया तो उन्हें देखकर सबकी आखों में आंसू आ गए थे। वे पहले वाले भगत सिंह नहीं थे। जिनका खूबसूरत, स्वस्थ एवं बलिष्ठ शरीर सबके बीच चर्चा का विषय बना रहता था। कई महीनों की निरन्तर जेल यातनाओं और लम्बी भूख हड़ताल ने उनके बलिष्ठ शरीर को कांटा बना दिया और इसके बाद भी उन्होंने बहस में भाग लिया था और निर्णायक भूमिका अदा की थी। उनका कहना था कि गिरफ्तारी के बाद सब कुछ समाप्त नहीं हो गया है और यह सोचना कि अब किसी को कुछ नहीं करना है गलत होगा। उनके अनुसार जो लोग छूट सकते थे उन्हें छुड़ाने का पूरा प्रयास करने को कहा था और केस को एक राजनैतिक उद्देश्य व राजनितिक ढंग से ही लड़ने को कहा था। उनके अनुसार शत्रु की अदालत में किसी प्रकार का भ्रम या आशा रखना क्रांतिकारियों की विदेशी सरकार के इस अदालती नाटक और न्याय के ढकोसले

---

[24] जितेन्द्र सान्याल, **पूर्वोक्त**, पृ. 51

की बख्यिां उधेड़कर क्रांतिकारियों को अजेय मानसिक भाक्ति का प्रदर्शन करना चाहिए।[25]

वे अदालत को क्रांतिकारी आदर्श व समाजवादी विचारधारा को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रचार के साधन के रूप में इस्तेमाल करना चाहते थे। साथ ही वे ये भी चाहते थे कि क्रांतिकारी अदालत में तथा जेलों में राजनीतिक बन्दियों के अधिकारों के लिए अनवरत संघर्ष करें। 10 जुलाई को जब केस शुरू हुआ तो भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त भूख हड़ताल पर थे। 13 जुलाई, 1929 को बाकी साथियों ने भी इनके समर्थन में भूख हडताल कर दी थी।

जेलों में राजनीतिक बंदियों के साथ जो अमानवीय अपमानजनक व्यवहार होता था। उसके लिए 14 जुलाई 1929 को भगत सिंह ने होम मैम्बर को पत्र भेजा और उसमें बहुत सी मांगे रखी गई।[26]

राजनीतिक बन्दी होने के नाते क्रांतिकारियों को अच्छा खाना दिया जाए और उनके भोजन का स्तर युरोपीयन कैदियों के स्तर का हो। काम के नाम पर राजनीतिक बंदियों को जेलों में सम्मानहीन काम करने के लिए बाध्य न किया जाए। पुस्तकें तथा लिफाफे का समान बगैर किसी रोक–टोक के प्राप्त करने की सुविधा दी जाए। राजनीतिक बंदियों को एक अलग राजनीतिक बंदियों का एक

---

[25] शिव वर्मा, **पूर्वोक्त**, पृ. 47

[26] **पूर्वोक्त**, पृ. 48

विशेष वार्ड हो जिसमें उन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की सुविधा हो, जो यूरोपीयन बंदियों को उपलब्ध है। एक जेल में बन्द सभी राजनीतिक बन्दियों को उसी वार्ड में रखा जाए, स्नान के लिए सुविधा मिलनी चाहिए और कम से कम एक दैनिक समाचार–पत्र सरकारी खर्चे से दिया जाए।[27] इसी समय देश में हरेक की जुबान पर क्रांतिकारियों का अनशन था। उनके प्रति सहानभूति उमड़ पड़ी और बहुत से लोग व्रत रखकर उनके प्रति समर्थन प्रकट कर रहे थे। कुछ अखबारों में अनशनकारियों की सेहत के बारे में रोजाना स्वास्थ्य बुलेटिन दिया जा रहा था। अंग्रेजों के विरोध में ढेरों सभाएं की गई अमुतसर के जलियांवाला बाग में की गई एक सभा अंग्रेजी प्रशासन के लिए मानों एक चेतावनी थी कि यदि कैदियों को कुछ नुकसान हुआ तो उनकी जवाबदेही होगी। लाहौर में हुई एक सभा में 10 हजार लोगों ने एकत्र होकर क्रांतिकारियों के साथ अपनी एकता व्यक्त करने के लिए अपने हाथ उठाये। यह सहानुभूति इतनी व्यापक थी कि 21 जून को सारे मुल्क में भगत सिंह दिवस मनाया गया।

सरकार अब भी अड़ी हुई थी। जेलों में और भी साथी अनशन में शामिल होने के इच्छुक थे। युवा मगर दृढ़ क्रांतिकारी जतिन दास ने इस भावनात्मक नजरिए का विरोध किया। उन्होंने चेताया था कि यह संघर्ष लम्बा खिंचेगा। उन्होंने चेतावनी दी

---

[27] मलविन्द्र जीत सिंह वरैंच, **पूर्वोक्त**, पृ. 116

थी कि भूख हड़ताल में तिल–तिल कर मरना फांसी या गोली से मरने की तुलना में कहीं ज्यादा मुश्किल है। उन्होंने कहा था कि बिना लक्ष्य हासिल किए हड़ताल वापिस लेना क्रांतिकारी परम्पराओं के विरूद्ध होगा। आधे रास्ते हड़ताल वापिस लेने से बेहतर इसमें न शामिल होना होगा। उनकी अगुवाई में भूख हड़ताल शुरू हो गई। सरकार ने हडताल भंग करने के लिए अनेक चालें चली, कोठरियों में कई तरह का खाना रख दिया जाता और फिर हटा लिया जाता था। इस तरह अनशनकारियों की दृढ़ता की परीक्षा ली जा रही थी। परन्तु कोई भी फिसला नहीं था। कोठरियों में रखे पानी में दूध मिला दिया गया ताकि कैदी या तो अनशन तोड़े या प्यासे रहें।

सरकार को जब लगा कि हड़ताल खतरनाक बिन्दू तक पहुंच गई है तो सरकार ने वही नीति अपनाई, सुधार के लिए राजी हो जाना, पर उसे अमल में न लाना। उनको सुविधाएं व पर्याप्त भोजन देने को कहा गया। भगत सिंह ने अधिकारियों को कहा था कि यह सब पहले भी कहा जा चुका है और अनशनकारियों ने प्रस्ताव नामंजूर कर दिया।[28] वे आत्म बलिदान द्वारा जनता को जागृत करने के लिए एक उदाहरण बन जाने के लिए दृढ थे। जतिन दास का अनशन 63वें दिन खत्म हुआ। 13 सितम्बर को जतिन दास की मृत्यु हो गई थी।[29]

---

28 कुलदीप नैयर, **पूर्वोक्त**, पृ. 106

29 **पूर्वोक्त**, पृ. 108

जतिन की मृत्यु ने क्रांतिकारियों को दृढ़ बनाया और उन्होने स्वयं को आगामी अग्नि परीक्षा के लिए तैयार कर लिया था।

कांसपेरेसी की आड़ में सरकार भगत सिंह और उसके कुछ साथियों को फांसी पर लटकाने का निश्चय कर चुकी थी। उन्होंने भी तय कर लिया था कि वे अदालती कार्यवाही को एक प्रहसन की तरह लेंगे। वे इस नाटक को जनता के सामने खोल देना चाहते थे। रणनीति तय करने के लिए तीन व्यक्तियों–भगत सिंह, सुखदेव व विजय सिन्हा की एक समीति बनाई गई। उन्होंने तय किया था कि कुछ दिन तो वे अदालत जायेंगे ही नहीं ताकि यह जान लिया जाए कि स्वतंत्रता सेनानियों पर मुकदमा चलाने के लिए विदेशी सत्ता द्वारा नियुक्त मैजिस्ट्रेट को वे मान्यता ही नहीं देते। उन्होंने तय किया था कि वे कुछेक दिन सिर्फ इंकलाब जिन्दाबाद और साम्राज्यवाद का नारा लगाने के लिए अदालत में जायेंगे। कुछ एक दिन वे अदालत में अपने विश्वास की घोषणा करने के लिए जाएगें कि उनके राष्ट्र का उत्थान सिर्फ स्वतंत्रता और क्रांति के जरिए हो सकता है।[30] जतिन दास तेजी से मृत्यु की तरफ बढ़ रहे थे। काफी साथी अनशन खत्म कर चुके थे। पर जतिन ने अनशन नहीं तोड़ा। भगत सिंह के व्यक्तिगत अनुरोध पर वे अपनी आंतों से टाक्सिन की सफाई के लिए एनिमा लेने पर राजी हो गए परन्तु उन्होंने भोजन को

---

[30] कुलदीप नैयर, **पूर्वोक्त**, पृ. 111

छुने से मना कर दिया। लाहौर षडयंत्र केस की सुनवाई के परीक्षण से भगत सिंह और उनके साथियों की सूक्ष्म नीति का पता चलता है। उन्होंने तय किया था कि सुनवाई इस प्रकार संचालित हो जिससे उनके सिद्धान्तों, उद्देश्यों तथा तरीकों का प्रचार हो। प्रतिदिन केस की सुनवाई का आरम्भ क्रांति अमरहो, सर्वहारा अमर हो, साम्राज्यवाद का अंत हो के नारों तथा सामूहिक राष्ट्रीय गीत के साथ होता था, जिसका असर मिलने वालों पर शीघ्र होता था। इस प्रकार वे चाहते थे कि केस सुनवाई नवयुवकों को ट्रेनिंग तथा प्रेरणा देने का कार्य करें। वे विभिन्न अवसरों पर अपना संदेश दिया करते थे। इस प्रकार भगत सिंह ने स्वतंत्रता आन्दोलन को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए विभिन्न कार्य किए।[31] भगत सिंह व हिन्दुस्तान प्रजातंत्र संघ के प्रमुख नेता सभी जेलों में बन्द थे। जहां उन्हें पढ़ने व विचार विमर्श करने का भरपूर मौका मिलता था। जिससे उनके अन्दर नई समझ पैदा हुई और उन्होंने अपने अतीत को पूरी तरह परखा और अपनी अब तक की कार्यप्रणाली को छोड़कर समाजवादी क्रांति का रास्ता अपनाने का निर्णय लिया। उन्होंने युवा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के नाम एक अपील लिखी थी। जिसमें उन्होंने जनसाधारण के बीच काम करने के महत्वूपर्ण बताया। उन्होंने गांवों में और कारखानों में किसान और मजदूर को ही असल क्रांतिकारी सैनिक बताया था। भगत सिंह ने आतंकवादी

---

31 शिव वर्मा, **पूर्वोक्त**, पृ. 51

की तरह कार्य किया था। लेकिन वे आतंकवादी नहीं थे। उनके अनुसार क्रांतिकारी के पास लम्बा कार्यक्रम और उसके बारे में सुनिश्चित विचार होते हैं। वे कहते थे कि उन्हें पेशेवर क्रांतिकारियों की जरूरत है, ये शब्द उन्होंने लेनिन से लिए थे उन्होंने अपनी पार्टी के लिए मजदूरों व किसानों को संगठित करना व उनकी सहानुभूति प्राप्त करना आवश्यक बताया था। उन्होने अपनी पार्टी को कम्युनिस्ट पार्टी का नाम दिया जाना संभव बताया। इस तरह से भगत सिंह ने खुल्लम–खुल्ला मार्क्सवाद, समाजवादी व साम्यवाद और एक साम्यवादी पार्टी की वकालत करते हुए देखा जा सकता है।[32]

क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी सरकार की नाक में दम कर दिया था। ब्रिटिश सरकार अब उन्हें जल्द फांसी देना चाहती थी। इसके लिए उन्होंने एक ट्रिब्यूनल बनाया। वह ट्रिब्यूनल जस्टिस जे. कोल्डस्ट्रीम की अध्यक्षता में बनाया गया। जस्टिस आगा हैदर और जस्टिस जी.सी. हिल्टन ट्रिब्यूनल के अन्य सदस्य थे। ट्रिब्यूनल की नियुक्ति न्याय के नियमों के एकदम विरूद्ध थी। इसके परिणामों को पहले ही निश्चित कर लिया गया था। भगत सिंह ने इसमें कोई रूचि नहीं दिखाई थी, इसलिए इस मुकदमें में उन्होंने स्वयं बहस की। उसकी कार्यवाही पुंच हाउस में शुरू हुई थीं भगत सिंह ने इंकलाब जिन्दाबाद का नारा बुलन्द किया था और

---

32 भगत सिंह, **आई एम रिवोल्यूशनरी नॉट ए टैररिस्ट**, जनवादी सांस्कृतिक मंच, फतेहाबाद, 1987, पृ. 13

बिस्मिल ने क्रांतिकारी गजल का सस्वर पाठ करना शुरू कर दिया था, जिससे कोल्डस्ट्रीम क्रोधित हो गया था और अदालत की कार्यवाही स्थगित हो गई थी। उसके बाद जब कार्यवाही शुरू हुई फिर भगत सिंह ने वही नारा लगाया था। वे कोल्डस्ट्रीम के कहने पर नहीं रूके थे। पुलिस ने भगत सिंह व उनके साथियों पर लाठी, डण्डों का खुलकर प्रयोग किया था।

ट्रिब्यूनल के एक सदस्य जस्टिस हैदर पर यह देखा न गया तो उसने अपने मुंह पर अखबार ढक लिया था। ट्रिब्यूनल के अध्यक्ष कोल्डस्ट्रीम ने कार्यवाही में लिखा था कि अभियुक्तों के दुर्व्यवहार के कारण अदालत की कार्यवाही को स्थगित किया गया लेकिन इस टिप्पणी पर आगाहैदर ने हस्ताक्षर नहीं किये थे।[33] ट्रिब्यूनल अध्यक्ष ने पंजाब के गवर्नर के द्वारा वायसराय को संदेश भेजा था कि जस्टिस आगाहैदर के रहते भगत सिंह और उसके साथियों को फांसी नहीं दी जा सकती।

वायसराय ने नए आदेश द्वारा ट्रिब्यूनल को तोड़कर नया ट्रिब्यूनल बना दिया था। भगत सिंह व उसके साथी अदालत में नहीं गए थे। 7 अक्टूबर, 1930 को ट्रिब्यूनल का फैसला सुनाया था। जिसमें भगत सिंह, राजगुरू तथा सुखदेव को फांसी, कुछ को कालेपानी की सजा, कुछ को सात साल व तीन वर्ष की कैद की सजा सुनाई गई थी। डिफेंस कमेटी अब ट्रिब्यूनल के फैसले के विरूद्ध प्रिव

[33] दीपचन्द्र निर्मोही, **पूर्वोक्त,** पृ. 75–76

कौंसिल में अपील करने की तैयारी कर रही थी। परन्तु भगत सिंह अपील के विरोध में थे। भगत सिंह को डर था कि यदि प्रिवी कौंसिल के न्यायाधीश निष्पक्ष रहे तो ट्रिब्यूनल का फैसला समाप्त हो सकता है या उनको फांसी की सजा रोकी जा सकती है।

उनके सब किये–कराये पर पानी फिर जाएगा। उनकी आत्मा की मांग थी मृत्यु और 23 मार्च को भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी दे दी गई थी।[34]

---

34 मदन लाल कपूर, **पूर्वोक्त**, पृ. 152

निष्कर्ष

शहीद भगत सिंह की स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं। भगत सिंह से पहले स्वंत्रता आन्दोलन अपनी दशा व दिशा तय नहीं कर पाया था। भगत सिंह ने अपने क्रांतिकारी कार्यो और अपनी समाजवादी विचारधारा के अनुरूप स्वंतत्रता आन्दोलन में योगदान दिया। स्वंतत्रता आन्दोलन में देश के अन्दर विकसित हो रहें ब्रिटिश–साम्राज्यवाद विरोधी धारा में समय–समय पर विभिन्न लोगों, वर्गो एवं दलों ने भाग लिया था। जिसमें अधिकतर ने शुरू से ही क्रांतिकारी आन्दोलन का मार्ग चुना था और बहुत से क्रांतिकारी लोग शहीद हो गए थे। त्याग और शोर्य को राजनीति में देश की नोजवान पीढ़ी समूचे राष्ट्र में अग्रणी रही थी।

महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में जो योगदान दिया वह अंहिसात्मक था जबकि भगत सिंह व अन्य नोजवानों ने क्रांतिकारी मार्ग अपनाया था। भगत सिंह का नाम स्वंतत्रता आन्दोलन के क्रांतिकारियों में बहुत ऊंचा है। भगत सिंह ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना बलिदान तक दे दिया था जिस कारण उनका नाम अमर हो गया है। भगत सिंह को क्रांतिकारी आन्दोलन में कुदने के लिए अनेक कारकों ने प्रेरित किया था। इसमें उनके परिवारिक परिवेश की अहम भूमिका थी। उनका पूरा परिवार अंग्रेजों के विरोधी आन्दोलन में शामिल था। उनके अध्यापकों व मित्रों ने उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

थी। उनके राजनीतिक गुरू करतार सिंह सराभा को फांसी की सजा ने उनके राजनैतिक जीवन को बदल कर रख दिया था। उन्होंने महात्मा गांधी का रास्ता त्यागकर क्रांतिकारी जीवन की तरफ कदम बढ़ाए थे। रोलेट एक्ट, जलियांवाला बाग हत्या कांड, असहयोग आन्दोलन के महात्मा गांधी द्वारा वापसी, **लाला लाजपतराय की मृत्यु** ने भगत सिंह के हृदय को कूरेद कर रख दिया था। भगत सिंह को यूरोपीय क्रांतियों के इतिहास व क्रांतिकारी साहित्य ने भी काफी प्रेरित किया था।

भगत सिंह इतिहास के छात्र थे और इतिहास उनका पंसदीदा विषय रहा था। असहयोग आन्दोलन की वापसी और नेशनल कालेज में दाखिले ने उनकी क्रांतिकारी राह को पक्का कर दिया था। वे प्रसिद्ध फ्रांसीसी अराजकतावादी विचारक **शहीद वैलिया** के अमर वाक्य "**बहरों को सुनाने के लिए बहुत ऊंची आवाज की आवश्यकता होती है।**" इन सब से प्रभावित होकर भगत सिंह ने क्रांतिकारी कार्य किए थे। इनके कारण उन्होंने क्रांतिकारी मार्ग को अपनाया था। भगत सिंह से पूर्ववर्ती क्रांतिकारियों के मस्तिष्क में देश की आजादी की लड़ाई की रणनीति और भावी परिकल्पना स्पष्ट नहीं थी और आजादी के बाद देश का क्या स्वरूप होगा, स्वाधीनता संघर्ष में जनता के किस वर्ग की क्या भूमिका होगी, और

निर्णायक शक्ति कौन होगा, ब्रिटिश राज को उखाड फैकने के बाद राष्ट्र की बागडोर किसके हाथ में आएगी इन बुनियादी सवालों के सम्बन्ध में अनभिज्ञ थे।

20वीं सदी के तीसरे दशक में असहयोग आन्दोलन के बाद गांधी के नेतृत्व से असन्तुष्ट होकर क्रांतिकारी पुनः अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न हो गए थे। अब अन्र्तराष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक परिस्थितियों के नए दौर में प्रवेश कर चुकी थी। उत्तर प्रदेश में 1925 में हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन की स्थापना की गई थी जो कि तब तक के क्रांतिकारी आन्दोलन में वैज्ञानिक दृष्टि से सबसे प्रगतिशील संस्था थी। यह वह संगठन था जिसने प्रथम बार उन सभी संस्थाओं के अन्त की बात कही थी। जो मनुष्य के शोषण को सम्भव बनाती है। स्वतंत्रता के मूलभूत सिंद्धात मताधिकार को अपने संविधान में अंकित किया था और रेल, खान, स्टील, जहाज बनाने वाले भारी कारखानों के राष्ट्रीयकरण की बात कही थी। उसमें समाजवाद के अनुसार कार्य करने को कहा गया और किसान मजदूर और आम जनता को संगठित करने पर बल दिया था। जो क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में महत्वूर्ण विकास को प्रकट करता है। उस संस्था ने क्रांतिकारी आन्दोलन को समाजवादी रूप प्रदान किया था और भगत सिंह के लिए मार्ग प्रशस्त करने में अहम भूमिका निभाई थी।

भगत सिंह ने क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में एक नए युग का सूत्रपात किया था। भगत सिंह ने ही सर्वप्रथम समाजवाद का उदघोश किया था और आगे चलकर वे भारतीय राजनीति में समाजवाद और क्रांति के प्रतीक बन गए थे। भगत सिंह स्वभाव से बहुत ही संवेदनशील और दूरदर्शी क्रांतिकारी थे। उनके संक्षिप्त राजनीतिक जीवन में उनके गुणों का प्रतिबिम्बन तत्कालीन छोटी–बड़ी घटना में सक्रिय हस्तक्षेप के रूप में देखने को मिलता है।

भगत सिंह ने क्रांतिकारी आंन्दोलन की दिशा व लक्ष्य निर्धारित किया था। उनका राजनीतिक जीवन 1926 में नौजवान भारत सभा की स्थापना के साथ शुरू हुआ था। राष्ट्रीय पटल पर भगत सिंह का नाम एक चमकते हुए क्रांतिकारी सिंतारे की भांति उदय हुआ। उनका राजनैतिक जीवन अन्य क्रांतिकारी नेताओं की अपेक्षा छोटा अवश्य था लेकिन तुफान की तरह प्रभावशाली रहा था।

भगत सिंह से सम्बन्धित क्रांतिकारी आंदोलन का चरित्र और स्वरूप पूर्ण क्रांतिकारी आंदोलन से भिन्न था। सभा के क्रांतिकारी गांधीवादी विचारधारा में विश्वास नहीं करते थे। वे लोग गांधी की अहिंसावादी राजनीतिक मार्ग और शांति पूर्ण प्रतिरोध को स्वाधीनता प्राप्ति के लिए कारगर संघर्ष नहीं मानते थे। भगत सिंह और नौजवान भारत सभा ने क्रांतिकारी विचारधारा का प्रचार–प्रसार अंग्रेजी शासन विरोधी भावनाओं को तीव्र किया था। सभा ने अपना घोषणापत्र भी प्रकाशित किया

था। इसमें किसानों–मजदूरों के गणराज्य को लक्ष्य घोषित किया गया और जिसमें समानता और समाजिक न्याय अन्तरनिहित था। रूस की समाजवादी व्यवस्था से प्रेरित होकर सभा ने किसानों मजदूरों को एक जुट करके आन्दोलन विकसित करने की दिशा में पहल भी की थी।

शहीद भगत सिंह को एक राजनीतिक चिन्तक के रूप में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। भगत सिंह ने हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन में समाजवाद शब्द जोड़कर अपनी राजनीति दूरदर्शिता व सूझबूझ का परिचय दिया था। क्रांतिकारी दल भगत सिंह के नेतृत्व में समाजवाद को अपना लक्ष्य घोषित करना एक अति महत्वपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन का संकेत था। उन्होंने समाज की आवश्यकताओं को बदलते समाजिक परिवेश में जाना और समाजवाद को शोषणहीन समाजिक व्यवस्था के सृजन तथा आम जनता की खुशहाली के लिए जरूरी समझा था। उस दौर के समस्त क्रांतिकारियों में भगत सिंह ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने सबसे आगे बढ़कर समाजवाद की ऐतिहासिक अनिवार्यता को पहचाना था और उसका राजनीति अलिंगन किया था। भगत सिंह का विश्वास था कि हर प्रकार के शोषण और समाज में गैर बराबरी को समाप्ति समाजवादी व्यवस्था में ही संभव है और तभी देश सर्वांगीण विकास के रास्ते पर आगे बढ़ सकता है। लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला लेने के लिए उन्होंने साण्डर्स की गोली मारकर हत्या कर दी थी और उन्होंने

कहा था कि वह आदमी उस निर्दयी, नीच और अन्यायपूर्ण व्यवस्था का अंग था जिस व्यवस्था को समाप्त कर देना आवश्यक है।

भगत सिंह ने केन्द्रीय असेम्बली में बम फैंके और **इंकलाब जिंदाबाद** साम्राज्यवाद मुर्दाबाद, **दुनिया के मजदूरों एक हों** नारे बुलन्द किए। वे नारे मात्र भावुक क्रांतिकारिता का प्रदर्शन न होकर दल की एक निश्चित वैज्ञानिक विचारधारा को प्रदर्शित करते थे। इन तीनों नारों का उदघोश करना और अपने आन्दोलन के लिए इनको नीति निर्देशक मानकर चलना उनके सार्वभौम दृष्टिकोण और व्यापक सोच को दर्शाते हैं। दिल्ली के सत्र न्यायधीश की अदालत में सरदार भगत सिंह द्वारा दी गई क्रांति को सुव्यवस्थित, सुसंगठित और वैज्ञानिक परिभाषा अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। जो उनके गहन अध्ययन को रेखांकित करने के साथ–साथ उनको क्रांति के व्यापक अर्थ, परिभाषा एवं क्रांति की वैज्ञानिक आवधारणा को भी जनता के सम्मुख प्रस्तुत करती है। जो समाज में स्वंतत्रता समानता, न्याय और अधिकार से विहीन, शोषित, उत्पीड़ित दलित लोगों के लिए मूल आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा और मकान को दिलाने में सहायक है। वे मौजूदा व्यवस्था में परिवर्तन करके ऐसी व्यवस्था की स्थापना करना चाहते थे जिसमें अन्न उगाने वाले किसान के लिए रोटी, ईंट बनाने वाले मजदूर को मकान तथा कपड़ा बनाने वाले बुनकर को तन ढकने के लिए कपड़ा मिलने पर आधारित हो। उन्होंने

मजदूर वर्ग को क्रांति का आवश्यक तत्व माना था। उन्होंने तत्कालीन समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन की जरूरत को महसूस करते हुए समाजवाद की स्थापना करना और पूंजीवाद को नष्ट करना अपना लक्ष्य बनाया था। उन्होंने कहा था कि जब तक एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य का एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण समाप्त नहीं होगा जिसे सम्राज्यवाद कहा जाता है तब तक पैदा होने वाली पीड़ाओं और अपमान से इंसानियत को बचाया नहीं जा सकता। उन्होंने क्रांति को मानव जाति का जन्मसिद्ध अधिकार बताया था और समाज को समाजवादी आधारों पर पुनर्गठित करने का दायित्व मजदूर वर्ग को सौंपा था।

उन्होंने क्रांति का मतलब बताया था कि सबको समान स्वतंत्रता देने के लिए क्रांति में कुछ न कुछ रक्तपात अनिवार्य है। उनके नारे इंकलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद से उनका अभिप्राय था कि क्रांति तब तक चलती रहे जब तक साम्राज्यवाद का नाश न हो। उन्होंने सेशन कोर्ट में अपने बयानों के माध्यम से अपनी बात व लक्ष्य को भारतीय जनता तक पहुंचाया था।

भगत सिंह एक युगान्तकारी व्यक्ति थें। उन्होंने स्वयं को हर समय क्रांति में संलग्न रखा। जेल में जाकर भी उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया था। लाहौर षडयंत्र केस के दौरान जेल में राजनीतिक कैदियों के प्रति किए जा रहे अमानवीय बर्ताव खिलाफ की गई बहादुराना और उदाहरणीय भूख हड़तालों की

साम्राज्यवाद विरोधी संग्राम का एक अभिन्न हिस्सा बना देना उनकी कुशल राजनीति का प्रमाण है। उन्होंने अपनी भूख हड़ताल को समाचार पत्र के माध्यम से अपनी बात व लक्ष्य को भारतीय जनता में पहुंचाया था और जिससे आदर्शवादी लोग संघर्ष में कुदने लगे थे। लाहौर षडयंत्र केस की सुनवाई में भी उन्होंने अपने सिद्धान्तों, उद्देश्य तथा तरीकों का प्रचार किया ताकि नवयुवकों को ट्रेनिग व प्ररेणा मिलती रहे। इस प्रकार उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया था। शहीदे आजम ने अपने जीवन को राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ इस प्रकार सम्बंद्ध किया था कि उनका प्रत्येक एकशन आजादी के लिए चलाई जा रही लड़ाई को गति प्रदान करें।

भगत सिंह ने केस की सुनवाई के दौरान लेनिन को वार्षिक गांठ पर कम्युनिष्ट इंटरनेशनल को कोर्ट के माध्यम से अपनी शुभकमानाऐं व्यक्त करते हुए तार भेजना उनकी राजनीतिक चेतना और जागरूकता का परिचय देता है। इस दोर में समाजवाद जिंदाबाद, कम्युनिष्ट जिंदाबाद, लेनिन अमर रहे और साम्राज्यवाद मुर्दाबाद के नारे निरन्तर विकसित होते रहे जोकि उनके मार्क्सवादी दृष्टिकोण को सामने लाते हैं। उन्होंने इनके अतिरिक्त कई दस्तावेजों में जैसे–कौम के नाम संदेश, ड्रीमलैंड की भूमिका, हिन्दुस्तान सोशलिष्ट रिपब्लिक ऐसोसिएशन का घोषणा पत्र युवा राजनीतिक कार्यकर्ताओं के नाम अपील आदि में समाजवादी मार्क्सवादी

दर्शन का प्रभाव उनके लेखन में परिलक्षित ही नहीं होता बल्कि स्पष्ट रूप से कार्ल–मार्क्स के सिद्धान्त पर आधारित है।

भगत सिंह के अनुसार उनको फांसी लगने के पन्द्रह वर्ष बाद अंग्रेज यहां से चले जाएंगे। क्योंकि उनकी जड़े खोखली हो चुकी है। किन्तु उनके चले जाने के बाद जो राज होगा वह लूट, स्वार्थ, गुंड़ागर्दी का राज होगा। पन्द्रह वर्ष तक लोग भगत सिंह व उनके साथियों को भूल जाएंगे। फिर उनकी याद ताजा होगी। लोग उनके विचारों को परखेंगे और वास्तविक समाज के सृजन के लिए मेहनतकश और ईमानदार लोग इक्टठे होंगे। ऐसे लोगों का समूह व संगठन परिश्रमी लोगों को श्रम का फल प्रदान कराएगा। भगत सिंह के वैचारिक पक्ष का स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भगत सिंह ने कई विषयों पर अपने विचार जनता के समक्ष रखें। वे एक सच्चे देश भक्त थे। उन्होंने देश के लिए घर त्याग दिया था और बाद में देश के लिए प्राण त्याग दिए थे। उन्होंने देश की एकता के लिए धर्म, जाति वर्ण, अछुत आदि विषयों पर अपने विचार रखें। उन्होंने हिन्दू, मुस्लिम, सिख, आदि को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया था। नौजवान भारत सभा के द्वारा राजनीतिक क्षेत्र में धर्म निरपेक्षता का पालन करने पर जोर दिया गया। हिन्दुस्तान रिपब्लिक ऐसोसिएशन भी धर्मनिरपेक्षता पर आधारित थी। इसके सदस्य देश के विभिन्न प्रान्तों से थे।

ईश्वर और धर्म के बारे में मैं नास्तिक क्यों हूँ शीर्षक से एक पम्पलेट लिखा था जिसमें धर्म को राजनीति से अलग रखना उनकी प्रगतिशीलता को उजागर करता है। उन्होंने अछूतों की समस्या को दूर करने का संदेश दिया था और सभी इन्सानों को समान बताया था। उन्होंने कहा था कि सभी जन्म से समान पैदा हुए हैं और कार्य विभाजन से भी कोई भिन्न नहीं है। आपस में मेल–मिलाप करों यदि इससे सम्भव न हो तो उन्होंने अछूतों को अपना संगठन बनाने के लिए कहा था और उन्होंने जाति के भेदभाव पर भी अपने विचार दिए। भगत सिंह ने अपनी अन्तिम इच्छा में जमादार के हाथ से रोटी खाई। जिससे पता चलता है कि उनका जाति के प्रति कोई भेदभाव नहीं था। उन्होंने सेशन कोर्ट को एक मंच के रूप में प्रयोग किया था। उन्होंने भारतीय जनता में अपने वैज्ञानिक समाजवादी विचार व भावी भारत के निर्माण के विचार फैलाए और जनता को जागरूक किया उन्होंने क्रांति के बारे में बताया था कि क्रांति बम और पिस्तौल से ही नहीं की जाती। वह विचारों की सान पर तेज होती है। क्रांति का लक्ष्य है मौजूदा समाजव्यवस्था में परिवर्तन करना जोकि अन्याय पर आधारित है। भगत सिंह ने आतंकवाद के बारे मे कहा था कि आंतकवाद सम्पूर्ण क्रांति नहीं है और क्रांति भी आंतकवाद के बिना पूर्ण नहीं होती। उन्होंने आंतकवाद को क्रांति का आवश्यक अंग बताया था। इसका मुख्य लक्ष्य शोषण विहीन समाज की स्थापना करना था।

जिसमें सब समान हों कोई भी जाति, लिंग, धर्म, अमीर–गरीब, अछूत आदि किसी भी विषय में किसी से कम न हो बल्कि समान हो। वे समाजवाद की स्थापना करना चाहते थे। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को विधान सभा, न्यायलय तथा जेल को प्लेटफार्म के रूप में इस्तेमाल करके अपने क्रांतिकारी विचारों व नीतियों को भारतीय जनता व विश्व के सामने स्पष्ट किया। भगत सिंह ने अपने दल को राष्ट्रीयता के साथ सम्बन्ध करके साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष को गति प्रदान की।

भगत सिंह अपने जीवन के 24 वर्ष पूरे नहीं कर पाए थे। फिर भी राजनीतिक परिपक्कवता में उनकी मिसाल, विवेक और राजनीतिक सूझ–बूझ की अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं, ब्यानों तथा पत्रों में बखूबी दिखाई देती है। राजनीति, समझौता, अराजकता, ईश्वर, धर्म, स्वाधीनता, संविधान, भाषा, साहित्य, प्यार, क्रांति, युद्ध आत्महत्या और दर्शन आदि विषयों पर अपनी लेखनी लिखी और एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार व्यक्त किए थे।

संपूर्ण भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में भगत सिंह ने क्रांतिकारी व समाजवादी कार्यो से महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कम्यूनिष्टों के अतिरिक्त वे अकेले क्रांतिकारी थे जिन्होंने अपने दल का ध्येय समाजवादी समाज की स्थापना घोषित किया था। यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण न होगा कि समाजवाद के लिए जितना काम भगत सिंह ने किया उतना कांग्रेस आज तक न कर सकी। ईंकलाब के नारे को जनप्रिय तथा

देश के कौने–कौने में पहुंचाने में भगत सिंह साम्यवादियों से निश्चित तौर पर कहीं अधिक सफल साबित हुए। जबकि यह नारा भगत सिंह से पहले साम्यवादियों ने ही उदघाटित किया था। साम्राज्यवाद मुर्दाबाद के नारे का भी इंकलाब जिंदाबाद की तरह व्यापक अर्थ था। इस नारे का स्पष्ट आश्य यह था कि विश्व स्तर पर मानवता के हित में संपूर्ण साम्राज्यवादी व्यवस्था का नाश होना चाहिए। जिसमें उन्हें आज विश्व स्तर पर समाजवादी विचारक के रूप में जाना जा रहा है। भगत सिंह क्रांतिकारी और समाजवादी विचारधारा दोनों के मिश्रण थे। उन्होंने अपने लक्ष्य यानि समाजवाद को स्थापित करने और अपने विचारों को भारतीय जनता में फैलाने के लिए ही क्रांतिकारी मार्ग अपनाया था। उनको आतंकवादी कहकर उनके बारे में गलत भावनाएं फैलाई जा रही हैं जो कि पूर्णतया गलत प्रतीत होती है। देश की रक्षा के लिए क्रांतिकारी कदम उठाने वालों को आतंकवादी कहना किसी भी तरीके से उचित प्रतीत नहीं होता। जबकि भगत सिंह ने अंग्रेज अधिकारियों के अतिरिक्त किसी को भी क्षति नहीं पहुंचाई थी। इस प्रकार वे एक आतंकवादी न होकर बल्कि गर्मपंथी यानि क्रांतिकारी विचारक थे। जिन्होंने समाजवाद के लिए ये कदम उठाए थे और इस तरह से उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन को अपने विचारों के अनुरूप चलाया था।

यह कहा जाता है कि क्रांतिकारियों को अपने लक्ष्य में सफलता नहीं मिली थी। यदि यह कहकर उनके योगदान को नकार जाता है तो इतिहास के साथ खिलवाड़ होगा। लक्ष्य में सफलता भले ही न मिली हो, उनके योगदान का अस्तित्व फिर भी है और रहेगा। अगर राष्ट्रीय आंदोलन का अवलोकन किया जाए तो पायेंगे कि महात्मा गांधी के किसी भी आन्दोलन को कामयाबी नहीं मिली और उनके द्वारा उठाई गई राजनीतिक मांगे अधर में लटकी रही।

किसी भी व्यक्ति का योगदान उनके साहसपूर्ण व सही दिशा में कार्यो से होता है न कि हर सफलता से होता है। सफलता और असफलता परिस्थितियों पर निर्भर करती है। यदि उपरोक्त मानदण्डो को योगदान का आधार माना जाए तो भगत सिंह और उनके साथियों का योगदान स्वतः मुखर हैं। उस काल में भगत सिंह और उनके बहादुर साथी ही थे जिन्होंने भारतीय युवकों के हृदय में राष्ट्र को स्वाधीनता तथा भारत भूमि से अंग्रेजी राज को ध्वस्त करने वाले संग्राम का भागीदार बनाने की भावनाएं उत्पन्न की थी।

भगत सिंह की बेमिसाल कुर्बानी ने भारतीय जनता के मन में अमिट छाप ही नहीं छोडी वरन व्यापक सामाजिक राजनीतिक संदर्भो से उनकी धारणा को संजीव किया उसे नये आयाम दिए और भारतीय जनगन के भीतर आजादी के लिए कई

गुणा क्रांतिकारी जोश भी पैदा किया था। जो कि आगे के सभी आन्दोलनों में परिलक्षित हुआ।

भगत सिंह के इस विश्वास के प्रति आस्था आज भी देश के नोजवानों में दिखाई पड़ती है। वर्तमान में भगत सिंह को व उनके विचारों की बहुत अधिक प्रासंगिकता है। भगत सिंह ने धर्म सम्बन्धी विचार दिए थे लेकिन भारत की आजादी से पहले देश धर्म के कारण दो भागों में बंट गया था। अब भी धर्म भारत की एकता में बाधा डाल रहा है। कांग्रेस सरकार धर्म के नाम पर होने वाले दंगों को रोकने में ना कामयाब रही।

अभी ताजा (2013) में मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) में साम्प्रदायिक दंगे हुए जिसमें सैंकड़ो लोगों की जान गई। इस साम्प्रदायिकता दंगों का जिम्मेवार भाजपा व सपा सरकार को अन्य राजनीतिक पार्टियों ने ठहराया। इस प्रकार आज भी भारत में राजनीति के लिए धर्म के नाम पर लोगों को आपस में लड़वाया जाता है। जिसमें भारतीय समाज धर्म के नाम पर टुकड़ो में बंटा हुआ दिखाई पड़ता है। जो विचार भगत सिंह ने धर्म के नाम पर दिए थे वे आज भी भारतीय समाज के लिए हितकर है और उनके धर्म सम्बन्धी विचारों की आज भी प्रासंगिकता जान पड़ती है। भगत सिंह ने जाति के बारे में भी अपने विचार दिए। जाति ने तो सम्पूर्ण समाज को अंधकार में भेज दिया है।

भारतीय राजनीति ने जाति व धार्मिक संकीर्णता को बढ़ावा दिया है। भारत में चुनाव के लिए टिकटों का बंटवारा जाति समीकरणों को जानकर ही किया जाता है। भारतीय समाज में जाति को राजनीति और राजनीति को जाति कहा जाता है। यह एक ही सिक्के के दो पहलू है। भारत में लिंग भेद भी बहुत अधिक है। इसको भी भारतीय समाज में असमानता का मुख्य कारण माना जाता है।

भारत में अमीर–गरीब का भेदभाव बहुत अधिक है। पूंजीपतियों द्वारा श्रमिकों व किसानों का शोषण हो रहा है। दिन–प्रतिदिन मजदूर व श्रमिक अधिक गरीब होते जा रहे हैं। भ्रष्टाचार ने भारतीय समाज का पतन कर दिया है। भारत में अभी 2009–2014 यू पी ए की सरकार में भ्रष्टाचार व घोटाले के मामले सामने आए है जिन्होंने भारतीय राजनीति को एक बार फिर से कलंकित कर दिया है।

इससे पैसा एक ही जगह यानि बहुत कम लोगों के हाथों में एकत्रित हो रहा है और फिर यह काला धन विदेशों में जमा हो रहा है। इस काले धन को लेकर बाबा रामदेव ने भी अनशन किया था। अन्ना हजारे ने भ्रष्टाचार पर नियंत्रण रखने के लिए लोकपाल बिल को पास कराने के लिए अनशन किया था। इस भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए अन्ना हजारे युवाओं द्वारा दूसरी क्रांति की बात करते थे। भारतीयों को अब तक राजनीतिक स्वंतत्रता के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला है।

आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता भारतीय जनता से काफी दूर है जो कि भगत सिंह दिलाने की सोचते थे।

इस प्रकार अत्याचार सहन करना भी भारतीयों की आदत बन गई है क्योंकि सारी शक्तियों पर भारतीय सरकार का प्रभुतत्व है। इस सरकार को जनता द्वारा जनता पर शासन की सरकार कहा जाता है। जो कि बिल्कुल सही नहीं है। भ्रष्टाचार और घोटालों ने समाज की काया पलट कर दी है। 16 वीं लोक सभा का चुनाव भाजपा द्वारा भ्रष्टाचार के विरूद्ध व विकास मॉडल को लेकर लड़ा गया है। इस चुनाव के दौरान अन्ना हजारे ने कहा कि चाहे सरकार किसी भी पार्टी की हो लेकिन जरूरी है व्यवस्था परिवर्तन करना जो कि ये पार्टियां नहीं कर रही है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भगत सिंह ने व्यवस्था परिवर्तन की बात कही थी। इस प्रकार उनके विचारों की प्रासंगिकता अधिक जान पड़ती है। टेलीविजन पर सरकारों के बारे में प्रश्न पूछे गये जिसमें अधिकतर लोगों ने व्यवस्था परिवर्तन को ही सभी समस्या का समाधान माना है।

इस प्रकार भगत सिंह के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने आजादी के आन्दोलन में थे। उन्होंने कहा था कि शोषण व अत्याचार समाप्त होना आवश्यक है चाहे वह अंग्रेजी सरकार हो या शुद्ध भारतीय सरकार हो। भारतीयों की आजादी तब तक पूर्ण आजादी नहीं होगी जब तक इनको समाप्त न किया जाए।

जोकि आज भी समाप्त नहीं हुए हैं इनके लिए लडाई अब भी जारी रखना भारतीयों का कर्तव्य है सभी को जागरूक होना होगा और इस प्रकार भ्रष्टाचार व अत्याचार के विरूद्ध लड़ाई लड़नी होगी। समाजवाद को अधिकतम रूप में लाना ही भारतवासियों का लक्ष्य होना चाहिए लेकिन जब तक समाजवाद नहीं आता है तब तक एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करनी होगी जिसमें तमाम भारतीय जनता की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी हों।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अयोध्या सिंह, **भारत का मुक्ति संग्राम,** ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2003

2. अग्निहोत्री, वी.के., **भारतीय इतिहास,** एलाइड पब्लिशर्स प्राईवेट लिमिटेड, दिल्ली, 2011

3. कपूर, मदन लाल, **आजादी के मतवाले, अमर शहीद भगत सिंह, उनके पूर्वज एवं साथी**, करनाल, 2010

4. गुप्त, मन्मनाथ, **भारतीय क्रांतिकारी** आन्दोलन **का इतिहास**, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 1960

5. घोष, अजय कुमार, **भगत सिंह एण्ड कामरेड्स,** पपिल्स पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2012

6. धवन, एम.एल., **भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन,** अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 2003

7. चमन लाल, **शहीद भगत सिंह के सम्पूर्ण दस्तावेज,** आधार प्रकाशन, पंचकूला (हरियाणा), 2004

8. जुनेजा, एम.एम., **बायोग्राफी ऑफ भगत सिंह,** मॉडर्न पब्लिकेशन, हिसार (हरियाणा), 2008

9. जसवाल, अवतार सिंह, **आजादी की लड़ाई,** अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2012

10.जिथोर्ज, जोश एंड मनोज कुमार, **रिथिकींग रैडिक्लीजम इन इण्डिया सोसाईटी,** रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009

11.जोहर, के.एल., **मारटीयर भगत सिंह एन इंटीमेट व्यू,** स्नेह प्रकाशन, यमुनानगर, 2007

12.देसाई, ए.आर., **भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि,** मैकमिलन इंडिया, 2007

13.दुआ, भूपेन्द्र, **ए मारटीयर्स नोट बुक : भगत सिंह**, आलेख पब्लिशर्स, जयपुर, 2004

14.दत्त, भगवान, **शहीद भगत सिंह के महत्वपूर्ण दस्तावेज,** एकता प्रकाशन, हिसार, 2012

15.नैयर, कुलदीप, **शहीद भगत सिंह – क्रांति के प्रयोग**, संवाद प्रकाशन, मेरठ, 2004

16.निर्मोही, दीप चन्द्र, **भगत सिंह से दोस्ती,** सूरज का सफर, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 2007

17.बी.एन. व जनमेजय सिंह, **भारत में सामाजिक आन्दोलन,** रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2005

18.भगत सिंह, **आई एम रिवोल्यूशनरी नॉट ए टैररिस्ट**, जनवादी सांस्कृतिक मंच, फतेहाबाद, 1987

19.भीलभद्र कुमार, **भगत सिंह–ए–रिमैम्बरेन्स मेनरूप्रयोग,** वॉल्यूम–49, नं. 16, अप्रैल, 2011

20.मिश्र, शिव कुमार, **गदर पार्टी से भगत सिंह तक**, लोक प्रकाशन गृह, दिल्ली, 2014

21.मुद्राराक्षस, **भगत सिंह होने का मतलब,** साहित्य उपक्रम, नई दिल्ली, 2008

22.यसपाल, **सिंघावलोकन**, लोक भर्ती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994

23.यादव, के.सी., **वाय आई एम एथिष्ट,** हॉप पब्लिकेशन, गुड़गांव, 2005

24.रंजन, रवि और एम.के. सिंह, **भगत सिंह,** के.के. पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009

25.राय, विकास नारायण, **भगत से दोस्ती,** इतिहास बोध प्रकाशन, दिल्ली, 2008

26.रघुबीर सिंह, **भगत सिंह और स्वतंत्रता संग्राम**, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1990

27.वरैच, मलविन्द्र जीत सिंह, **भगत सिंह, द एटेरनल रिबैल,** डायमण्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007

28.वर्मा, शिव, **शहीद भगत सिंह की चुनी हुई कृतियां,** समाजवादी साहित्य सदन, कानपुर, 1987

29.वर्मा, शिव, **संस्मृतियां**, लोक प्रकाशन, दिल्ली, 2007

30.विपिन चन्द्र, **भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन,** नई दिल्ली, 2000

31.विपिन चन्द्र, **स्वतंत्रता संग्राम,** नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1996

32.विपिन चन्द्र, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2007

33.विद्रोही, रमेश, **भगत सिंह – लाईफ प्रशनैलिटी एण्ड आईडियास,** भावना प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975

34.श्याम सुन्दर, **शहीद भगत सिंह के अति महत्वपूर्ण दस्तावेज,** एकता प्रकाशन, हिसार, हरियाणा, 2012

35.श्याम सुन्दर, **शहीद भगत सिंह लक्ष्य और विचारधारा,** एकता प्रकाशन, हिसार, हरियाणा, 2012

36.सान्याल, जितेन्द्र, **अमर शहीद सरदार भगत सिंह,** वस्तुकुंज, नई दिल्ली, 2012